सर्वमंगल दायक
श्री नेमिनाथ पूजन विधान

मण्डल

मध्य में – ह्रीं
प्रथम वलय श्रीं – 9
द्वितीय वलय क्लीं – 18
तृतीय वलय ब्लूं – 36
चतुर्थ वलय [illegible] – 72

रचयिता :

परम पूज्य क्षमामूर्ति, साहित्य रत्नाकर

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

कृति	–	**सर्वमंगल दायक श्री नेमिनाथ पूजन विधान**
कृतिकार	–	**प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज**
संस्करण	–	**पञ्चम–2012**
प्रतियाँ	–	**1000**
संकलन	–	**मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज**
सहयोग	–	**क्षुल्लक श्री 105 विदर्शसागरजी महाराज, ब्र. सुखनन्दनजी भैया**
संपादन	–	**ब्र. ज्योति दीदी (9829076085) आस्था दीदी, सपना दीदी**
संयोजन	–	**ब्र. सोनू दीदी, ब्र. किरण दीदी, आरती दीदी ● मो. 9829127533**
प्राप्ति स्थल	–	**1. जैन सरोवर समिति, निर्मलकुमार गोधा** 2142, निर्मल निकुंज, रेडियो मार्केट मनिहारों का रास्ता, जयपुर फोन : 0141-2319907 (घर) मो.: 9414812008 **2. श्री [illegible] जैन ठेकेदार** [illegible] अलवर मो.: 9414016566 **3. [illegible]** [illegible] वाला जैनपुरी [illegible] मो.: 09416882301 **4. लाल मंदिर, चाँदनी चौक, दिल्ली**
मूल्य	–	21/- [illegible]

–: अर्थ सौजन्य :–

1. श्री सुरेशचन्द्र [illegible] जैन
10768/1, सुभाष [illegible] नवीन शाहदरा, दिल्ली

2. श्रीमती [illegible] धर्मपत्नी श्री [illegible]कुमार जी बुखारिया
[illegible] मो. [illegible]

मुद्रक : राजू [illegible] आर्ट, जयपुर ● फोन : 2313339, मो.: 9829050791

प्रणति

जिन पूजा से सब सुख होय, जिन पूजा सम और न कोय।
जिनपूजा तें स्वर्ग विमान, अनुक्रम तें पावे निर्वाण।।

आज के भौतिकवादी युग में मानव इस कदर उलझनों में उलझ रहा है कि उसे खाने–पीने का भी समय नहीं मिलता है इस व्यस्ततम जीवन में रात–दिन पाप का उपार्जन करके अपना संसार परिभ्रमण बढ़ा रहा है अथवा 84 के चक्कर में लगा रहता है। इस 84 के चक्कर से छुटकारा पाने के लिए जिनेन्द्र देव की पूजा, भक्ति वर्तमान में पुण्य एवं परम्परा से मोक्ष का कारण है। रत्नकरण्ड श्रावकाचार में आचार्यश्री समन्तभद्र स्वामी ने कहा है–

उच्चैः गोत्रं प्रणते भोगोदानानुपासनात्पूजा।
भक्ते सुन्दर रूपं, स्तवनात् कीर्तिस्तपो निधिसु।।

वीतरागी जिनदेव, गुरु को प्रणाम करने से उच्च गोत्र, दान से भोग, उपासना से पूजा, भक्ति से सुन्दर रूप, स्तवन से कीर्ति की प्राप्ति होती है। अतः जिनपूजा सर्व–सौख्यदायिनी है।

इन्हीं सभी बातों को ध्यान में रखकर **प.पू. क्षमामूर्ति 108 आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज** के मन में एक टीस उत्पन्न हुई कि लोगों को दुःखों से मुक्ति प्राप्त हो और सुखमय जीवन बने तथा भक्ति पूजन का भाव हो। इसके लिए आचार्यश्री ने सर्वप्रथम श्री विघ्नहर पारसनाथ विधान लिखा जो वास्तव में विघ्नों का हरण करने वाला है। उसके बाद विधानों पर जो कलम चली तो चलती ही गई और **'सर्वमंगलदायक श्री नेमिनाथ पूजन विधान'** बनकर आपके सामने आया है। यह हमारे लिए बड़े गर्व की बात है जैसाकि गुरु का नाम है वैसा ही गुरुदेव 'गागर में सागर' भरने का कार्य करते हैं गुरु के उपकारों को इस जन्म में तो क्या कई जन्मों में भी नहीं चुका सकते हैं जो अपना समय निकालकर हमारे लिए कृतियाँ प्रदान की हैं। गुरुदेव के चरणों में नवकोटि से नमन।

– ब्र. आस्था दीदी

राजुल की पुकार

(तर्ज – कस्में वादे...)

खाना पीना क्रीड़ा करना, गहना भूल गये।
रथ को मुड़ते देखा ज्योंही, हंसना भूल गये।।

चीत्कार सुनकर पशुओं की, नेमि गये गिरनार को।
मिलने आये थे राजुल से, मिलना भूल गये।।

रथ पर हुए सवार नेमि जी, दूल्हा बनके आए थे।
भरने माँग आये थे लेकिन, भरना भूल गये।।

सुन पुकार राजुल की रथ के, घोड़े मुड़–मुड़ देख रहे।
विरह व्यथा से पीड़ित होकर, चलना भूल गये।।

लगातार दोनों आँखों से, टप–टप आँसू बरस रहे।
इतने आँसू बरसे शायद, रूकना भूल गये।।

राजुल के संग क्रीड़ा करके, 'विशद' फूल खिल जाते थे।
वन उपवन के फूल दुखी हो, खिलना भूल गये।।

राजुल चली नेमि के संग में, संयम धार लिया।।
चले नेमि गिरनार गिरि को, गिरि के मूल गये।।

खाना पीना...

ज्ञान के ताज तुम धर्म के राज तुम।
राग से हीन तुम मोह से हीन तुम।।
नेमिनाथ प्रभो ! दो चरण की शरण।
तव चरण में विशद करूँ शत् शत् नमन।।

मूलनायक सहित समुच्चय पूजन

(स्थापना)

तीर्थंकर कल्याणक धारी, तथा देव नव कहे महान्।
देव–शास्त्र–गुरु हैं उपकारी, करने वाले जग कल्याण।।
मुक्ती पाए जहाँ जिनेश्वर, पावन तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
विद्यमान तीर्थंकर आदि, पूज्य हुए जो जगत प्रधान।।
मोक्ष मार्ग दिखलाने वाला, पावन वीतराग विज्ञान।
विशद हृदय के सिंहासन पर, करते भाव सहित आह्वान।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञान ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छंद)

जल पिया अनादि से हमने, पर प्यास बुझा न पाए हैं।
हे नाथ ! आपके चरण शरण, अब नीर चढ़ाने लाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल रही कषायों की अग्नि, हम उनसे सतत सताए हैं।
अब नील गिरि का चंदन ले, संताप नशाने आए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण शाश्वत मम अक्षय अखण्ड, वह गुण प्रगटाने आए हैं।
निज शक्ति प्रकट करने अक्षत, यह आज चढ़ाने लाए हैं।।

जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों से सुरभी पाने का, असफल प्रयास करते आए।
अब निज अनुभूति हेतु प्रभु, यह सुरभित पुष्प यहाँ लाए।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

निज गुण हैं व्यंजन सरस श्रेष्ठ, उनकी हम सुधि बिसराए हैं।
अब क्षुधा रोग हो शांत विशद, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञाता दृष्टा स्वभाव मेरा, हम भूल उसे पछताए हैं।
पर्याय दृष्टि में अटक रहे, न निज स्वरूप प्रगटाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जो गुण सिद्धों ने पाए हैं, उनकी शक्ति हम पाए हैं।
अभिव्यक्ति नहीं कर पाए, अतः भवसागर में भटकाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल उत्तम से भी उत्तम शुभ, शिवफल हे नाथ ना पाए हैं।
कर्मों कृत फल शुभ अशुभ मिला, भव सिन्धु में गोते खाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पद है अनर्घ मेरा अनुपम, अब तक यह जान न पाए हैं।
भटकाते भाव विभाव जहाँ, वह भाव बनाते आए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव 'विशद', जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- प्रासुक करके नीर यह, देने जल की धार।
लाए हैं हम भाव से, मिटे भ्रमण संसार।। शान्तये शांतिधारा..

दोहा- पुष्पों से पुष्पाञ्जली, करते हैं हम आज।
सुख-शांति सौभाग्यमय, होवे सकल समाज।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

पञ्च कल्याणक के अर्घ

तीर्थंकर पद के धनी, पाएँ गर्भ कल्याण।
अर्चा करे जो भाव से, पावे निज स्थान।।1।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महिमा जन्म कल्याण की, होती अपरम्पार।
पूजा कर सुर नर मुनी, करें आत्म उद्धार।।2।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप कल्याणक प्राप्त कर, करें साधना घोर।
कर्म काठ को नाशकर, बढ़ें मुक्ति की ओर।।3।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रगटाते निज ध्यान कर, जिनवर केवलज्ञान।
स्व-पर उपकारी बनें, तीर्थंकर भगवान।।4।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों कर्म विनाश कर, पाते पद निर्वाण।
भव्य जीव इस लोक में, करें विशद गुणगान।।5।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- तीर्थंकर नव देवता, तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
देव शास्त्र गुरुदेव का, करते हम गुणगान।।

(शम्भू छन्द)

गुण अनन्त हैं तीर्थंकर के, महिमा का कोई पार नहीं।
तीन लोकवर्ति जीवों में, और ना मिलते अन्य कहीं।।
विंशति कोड़ा-कोड़ी सागर, कल्प काल का समय कहा।
उत्सर्पण अरु अवसर्पिण यह, कल्पकाल दो रूप रहा।।1।।
रहे विभाजित छह भेदों में, यहाँ कहे जो दोनों काल।
भरतैरावत द्वय क्षेत्रों में, कालचक्र यह चले त्रिकाल।।
चौथे काल में तीर्थंकर जिन, पाते हैं पाँचों कल्याण।
चौबिस तीर्थंकर होते हैं, जो पाते हैं पद निर्वाण।।2।।
वृषभनाथ से महावीर तक, वर्तमान के जिन चौबीस।
जिनकी गुण महिमा जग गाए, हम भी चरण झुकाते शीश।।
अन्य क्षेत्र सब रहे अवस्थित, हों विदेह में बीस जिनेश।
एक सौ साठ भी हो सकते हैं, चतुर्थकाल यहाँ होय विशेष।।3।।
अर्हन्तों के यश का गौरव, सारा जग यह गाता है।
सिद्ध शिला पर सिद्ध प्रभु को, अपने उर से ध्याता है।।
आचार्योपाध्याय सर्व साधु हैं, शुभ रत्नत्रय के धारी।
जैनधर्म जिन चैत्य जिनालय, जिनवाणी जग उपकारी।।4।।

प्रभु जहाँ कल्याणक पाते, वह भूमि होती पावन।
वस्तु स्वभाव धर्म रत्नत्रय, कहा लोक में मनभावन।।
गुणवानों के गुण चिंतन से, गुण का होता शीघ्र विकाश।
तीन लोक में पुण्य पताका, यश का होता शीघ्र प्रकाश।।5।।
वस्तू तत्त्व जानने वाला, भेद ज्ञान प्रगटाता है।
द्वादश अनुप्रेक्षा का चिन्तन, शुभ वैराग्य जगाता है।।
यह संसार असार बताया, इसमें कुछ भी नित्य नहीं।
शाश्वत सुख को जग में खोजा, किन्तु पाया नहीं कहीं।।6।।
पुण्य पाप का खेल निराला, जो सुख-दुःख का दाता है।
और किसी की बात कहें क्या, तन न साथ निभाता है।।
गुप्ति समिति धर्मादि का, पाना अतिशय कठिन रहा।
संवर और निर्जरा करना, जग में दुर्लभ काम कहा।।7।।
सम्यक् श्रद्धा पाना दुर्लभ, दुर्लभ होता सम्यक् ज्ञान।
संयम धारण करना दुर्लभ, दुर्लभ होता करना ध्यान।।
तीर्थंकर पद पाना दुर्लभ, तीन लोक में रहा महान्।
विशद भाव से नाम आपका, करते हैं हम नित गुणगान।।8।।
शरणागत के सखा आप हो, हरने वाले उनके पाप।
जो भी ध्याए भक्ति भाव से, मिट जाए भव का संताप।।
इस जग के दुःख हरने वाले, भक्तों के तुम हो भगवान।
जब तक जीवन रहे हमारा, करते रहें आपका ध्यान।।9।।

दोहा- नेता मुक्ति मार्ग के, तीन लोक के नाथ।
शिवपद पाने नाथ हम, चरण झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अनर्घपदप्राप्त्ये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- हृदय विराजो आन के, मूलनायक भगवान।
मुक्ति पाने के लिए, करते हम गुणगान।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

श्री नेमिनाथ स्तुति

(शम्भू छन्द)

नेमिनाथ जिन के चरणों में, झुकता है यह जग सारा।
कामबली पर विजय प्राप्त की, जिससे सारा जग हारा।।
हे प्रभो ! आप करुणा कर हो, हमको करुणा का दान करो।
यह भक्त पड़ा है चरणों में, हम पर भी कृपा प्रदान करो।।1।।

तुम पार हुए भव सागर से, मैं भव सागर में भटक रहा।
तुमने मुक्ति को पाया है, मैं जग वैभव में अटक रहा।।
हे नेमिनाथ करुणा नन्दन, करुणा की धारा बरसाओ।
जो भूले भटके राही हैं, उनको सद् मार्ग दिखा जाओ।।2।।

सद्धर्म आत्मा का भूषण, जो धारण उसको करता है।
वह जगत लक्ष्मी को तजकर, शुभ मुक्ति वधु को वरता है ।।
तुमने राजुल का त्याग किया, तो शिव रमणी को पाया है।
यह जान प्रभु मेरे मन में, शुभ भाव उमड़ कर आया है।।3।।

रिस्ते नाते सब धोखा हैं, बस नाता सत्य तुम्हारा है।
तुमसे अब मेरा नाता हो, यह पावन लक्ष्य हमारा है।।
संसार असार रहा प्रभु यह, हम क्या जाने तुम हो ज्ञाता।
भव पार करो हमको भगवन्, हे नाथ आप जग के त्राता।।4।।

तुम शिवादेवि के हो नन्दन, तुम तो शिवपुर के वासी हो।
तुम विश्व विभव को पाये हो, प्रभु सर्व कर्म के नाशी हो।।
प्रभु शांति सुधामृत के स्वामी, तुमने शांति को पाया है।
अब 'विशद' शांति को पाने का, मैंने शुभ भाव बनाया है।।5।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

श्री नेमिनाथ जिनपूजा

स्थापना

नेमिनाथ के श्रीचरणों में, भव्य जीव आ पाते हैं।
तीर्थंकर जिन के दर्शन से, सर्व कर्म कट जाते हैं।।
गिरि गिरनार के ऊपर श्रीजिन, को हम शीश झुकाते हैं।
हृदय कमल के सिंहासन पर, आह्वानन् कर तिष्ठाते हैं।।
राहु अरिष्ट ग्रह शांत करो, प्रभु हमने तुम्हें पुकारा है।
हमको प्रभु भव से पार करो, तुम बिन न कोई हमारा है।।

ॐ ह्रीं सर्वमंगल दायक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
अत्र-तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितौ भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

विषयों के विष की प्याला को, पीकर के जन्म गँवाया है।
प्रभु जन्म मरण के दु:खों से, छुटकारा ना मिल पाया है।।
हम मिथ्या मल धोने प्रभुजी, शुभ कलश में जल भर लाए हैं।
राहु अरिष्ट ग्रह शांति हेतु, प्रभु चरणों शीश झुकाए हैं।।

ॐ ह्रीं सर्वमंगल दायक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय जन्म, जरा, मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व.स्वाहा।

क्रोधादि कषायों के कारण, संताप हृदय में छाया है।
मन शांत रहे मेरा भगवन, यह भक्त चरण में आया है।।
संसार ताप के नाश हेतु, हम शीतल चंदन लाए हैं।
राहु अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, चरणों शीश झुकाए हैं।।

ॐ ह्रीं सर्वमंगल दायक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

क्षणभंगुर वैभव जान प्रभु, तुमने सब राग नशाया है।
व्रत संयम तेज तपस्या से, अभिनव अक्षय पद पाया है।।
हो अक्षय पद प्राप्त हमें भगवन्, हम अक्षय अक्षत लाए हैं।
राहु अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, चरणों शीश झुकाए हैं।।

ॐ ह्रीं सर्वमंगल दायक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्व.स्वाहा।

है प्रबल काम शत्रू जग में, तुमने उसको ठुकराया है।
यह भक्त समर्पित चरणों में, तुमसा बनने को आया है।।
प्रभु कामवाण के नाश हेतु, यह प्रमुदित पुष्प चढ़ाए हैं।
राहु अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, चरणों शीश झुकाए हैं।।

ॐ ह्रीं सर्वमंगल दायक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व.स्वाहा।

हे नाथ ! भोग की तृष्णा ने, अरु क्षुधा ने हमें सताया है।
मन मर्कट सब पदार्थ खाकर, भी तृप्त नहीं हो पाया है।।
प्रभु क्षुधा रोग के शमन हेतु, यह व्यंजन सरस ले आए हैं।।
राहु अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, चरणों शीश झुकाए हैं।।

ॐ ह्रीं सर्वमंगल दायक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व.स्वाहा।

मोहांध महा अज्ञानी हूँ, जीवन में घोर तिमिर छाया।
मैं रागी द्वेषी बना रहा, निज के स्वभाव से बिसराया।।
मोहांधकार का नाश करूँ, यह दीप जलाने लाए हैं।
राहु अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, चरणों शीश झुकाए हैं।।

ॐ ह्रीं सर्वमंगल दायक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्व.स्वाहा।

कर्मों की सेना ने कैसा, यह चक्र व्यूह रचवाया है।
मुझ भोले-भाले प्राणी को, क्यों उसके बीच फँसाया है।।
अब अष्ट कर्म की धूप जले, यह धूप जलाने लाए हैं।
राहु अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, चरणों शीश झुकाए हैं।।

ॐ ह्रीं सर्वमंगल दायक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व.स्वाहा।

हमने चित् चेतन का चिंतन, अरु मनन नहीं कर पाया है।
सद्दर्शन ज्ञान चरित का फल, शुभ फल निर्वाण न पाया है।।
अब मोक्ष महाफल दो स्वामी, हम श्रीफल लेकर आए हैं।
राहु अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, चरणों शीश झुकाए हैं।।

ॐ ह्रीं सर्वमंगल दायक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्व. स्वाहा।

अविचल अनर्घ पद पाने का, हमने अब भाव जगाया है।
अतएव प्रभु वसु द्रव्यों का, अनुपम यह अर्घ्य बनाया है।।
दो पद अनर्घ हमको स्वामी, यह अर्घ्य संजोकर लाए हैं।
राहु अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, चरणों शीश झुकाए हैं।।

ॐ ह्रीं सर्वमंगल दायक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पंचकल्याणक के अर्घ्य

सोरठा– **नेमिनाथ भगवान, कार्तिक शुक्ला षष्ठमी।**
पाए गर्भ कल्याण, शिवा देवी उर आ बसे।।

ॐ ह्रीं कार्तिक शुक्लाषष्ठम्यां गर्भ मंगलमण्डिताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

हुआ जन्म कल्याण, श्रावण शुक्ला षष्ठमी।
सौरीपुर नगरी शुभम्, समुद्र विजय हर्षित हुए।।

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्लाषष्ठम्यां जन्म मंगलमण्डिताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सहस्र आम्रवन बीच, श्रावण शुक्ला षष्ठमी।
पशु आक्रंदन देख, तप धारे गिरनार पर।।

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्लाषष्ठम्यां तप कल्याणक मण्डिताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

हुआ ज्ञान कल्याण, आश्विन शुक्ल प्रतिपदा।
स्वपर प्रकाशी ज्ञान, नेमिनाथ जिन पा लिए।।

ॐ ह्रीं आश्विन शुक्ला प्रतिपदायां केवलज्ञान मण्डिताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाए पद निर्वाण, आठें शुक्ल आषाढ़ की।
हुआ मोक्ष कल्याण, ऊर्जयन्त के शीर्ष से।।

ॐ ह्रीं आषाढ़ शुक्ला अष्टम्यां मोक्षमंगल प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– **समुद्र विजय के लाड़ले, शिवादेवी के लाल।**
नेमिनाथ जिनराज की, गाते हैं जयमाल।।

सुरेन्द्र नरेन्द्र मुनीन्द्र गणीन्द्र, शतेन्द्र सुध्यान लगाते हैं।
जिनराज की जय जयकार करें, उनका यश मंगल गाते हैं।।
जो ध्यान प्रभु का करते हैं, दुख उनके सारे हरते हैं।
जो चरण शरण में आ जाते, वह भवसागर से तरते हैं।।
तुम धर्ममयी हो कर्मजयी, तुममें जिनधर्म समाया है।
तुम जैसा बनने हेतु नाथ !, यह भक्त चरण में आया है।।
प्रभु द्रव्य भाव नोकर्म सभी, अरु राग द्वेष भी हारे हैं।
प्रभु तन में रहते हुए विशद, रहते उससे अति न्यारे हैं।।
जिसको भव सुख की चाह नहीं, वह दुख से क्या भय खाते हैं।
वह महाबली जिन धीर वीर, भवसागर से तिर जाते हैं।।
जो दयावान करुणाधारी, वात्सल्यमयी गुणसागर हैं।
वह सर्वसिद्धियों के नायक, शुभ रत्नों के रत्नाकर हैं।।
शुभ नित्य निरंजन शिव स्वरूप, चैतन्य रूप तुमने पाया।
उस मंगलमय पावन पवित्र, पद पाने को मन ललचाया।।
कर्मों के कारण जीव सभी, भव सागर में गोते खाते ।
जो शरण आपकी पाते हैं, वह उनके पास नहीं आते ।।
तुम हो त्रिकालदर्शी प्रभुवर, तुमने तीर्थंकर पद पाया है।
तुमने सर्वज्ञता को पाया, अरु केवलज्ञान जगाया है।।
तुम हो महान अतिशय धारी, तुम विधि के स्वयं विधाता हो।
सुर नर नरेन्द्र की बात कहाँ, तुम तो जन–जन के त्राता हो।।
तुम हो अनन्त ज्ञाता दृष्टा, चिन्मूरत हो प्रभु अविकारी।
जो शरण आपकी आ जाए, वह बने स्वयं मंगलकारी।।
जो मोह महामद मदन काम, इत्यादि तुमसे हारे हैं।
जो रहे असाता के कारण, चरणों झुक जाते सारे हैं।।
ज्यों तरुवर के तल आने से, राही शीतल छाया पाता।
प्रभु के शरणागत आने से, स्वयमेव आनन्द समा जाता।।

तुमने पशुओं का आक्रन्दन, लख कर संसार असार कहा।
यह तो अनादि से है असार, इसका ऐसा स्वरूप रहा।।
हे जगत पिता ! करुणा निधान, यह सब तो एक बहाना था।
शायद कुछ इसी बहाने से, राजुल को पार लगाना था।।
राजुल का तुमने साथ दिया, उससे नव भव की प्रीति रही।
पर हमसे प्रीति निभाई न, वह खता तो हमसे कहो सही।।
अब शरण खड़ा है शरणागत, इसका भी बेड़ा पार करो।
कह रहा भक्ति के वशीभूत, हे ! दयासिंधु स्वीकार करो।।
जो शरण आपकी आ जाए, वह भव में कैसे भटकेगा।
जो भक्ति भाव से गुण गाए, वह जग में कैसे अटकेगा।।
तुम तीर्थंकर बाइसवें प्रभु, तुम बाईस परीषह को जीते।
तुमने अनन्त बल सुख पाया, तुम निजानन्द रस को पीते।।
जैसे प्रभु भव से पार हुए, वैसे मुझको भी पार करो।
हमको आलम्बन दे करके, प्रभु इस जग से उद्धार करो।
जो भाव सहित पूजा करते, वह पूजा का फल पाते हैं।।
पूजा के फल से भक्तों के, सारे संकट कट जाते हैं।
हम जन्म-जरा के संकट से, घबड़ाकर चरणों आये हैं।
अब उभय रूप प्रभु मोक्ष महापद, पाने को शीश झुकाये हैं।।

(छन्द घत्तानन्द)

जय नेमि जिनेशं हितउपदेशं, शुद्ध बुद्ध चिद्रूपयति।
जय परमानन्दं आनन्दकंदं, दयानिकंदं ब्रह्मपति।।

ॐ ह्रीं सर्व मंगल दायक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **नेमिनाथ के द्वार पर, पूरी होती आश।**
मुक्ति हो संसार से, पूरा है विश्वास।।

इत्याशीर्वाद (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

क्षायिक नव लब्धियों के अर्घ्य

दोहा- **क्षायिक लब्धि प्राप्त कर, हुए प्रभु अरहन्त।**
पुष्पाञ्जलि से पूजकर, करें कर्म का अन्त।।

प्रथमवलयस्योपरि-पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(प्रथम वलय पर पुष्पाञ्जलि क्षेपण करें)

स्थापना

नेमिनाथ के श्री चरणों में, भव्य जीव आ पाते हैं।
तीर्थंकर जिन के दर्शन से, सर्व कर्म कट जाते हैं।।
गिरि गिरनार के ऊपर श्रीजिन, को हम शीश झुकाते हैं।
हृदय कमल के सिंहासन पर, आह्वानन कर तिष्ठाते हैं।।
राहु अरिष्ट ग्रह शांत करो प्रभु, हमने तुम्हें पुकारा है।
हमको प्रभु भव से पार करो, तुम बिन न कोई हमारा है।।

ॐ ह्रीं सर्व सर्वमंगलदायक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् इति आह्वानन्। अत्र-तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।।

अनन्त अनुबन्धी कषाएँ, कर्म दर्शन मोहनी।
सप्त प्रकृतियाँ विनाशे, कर्म वर्धक सोहनी।।
प्रकटकर सम्यक्त्व क्षायिक, कर रहे जीवन चमन।
अर्घ्य हम करते समर्पित, कर्म हों मेरे शमन।।1।।

ॐ ह्रीं क्षायिक सम्यक्त्व लब्धि प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्त प्रकृति के अलावा, मोहनी की शेष सब।
नाश कीन्हे ध्यान तप से, कोई भी न रही अब।।
प्रकट कर चारित्र क्षायिक, कर रहे जीवन चमन।
अर्घ्य हम करते समर्पित, कर्म हों मेरे शमन।।2।।

ॐ ह्रीं क्षायिक चारित्र लब्धि प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानावरणी कर्म नाशे, ज्ञान केवल पाए हैं।
अर्घ्य लेकर चरण में प्रभु, भाव से हम आए हैं।।
अनन्त चतुष्टय प्रभु पाए, चरण में उनके नमन्।
अर्घ्य हम करते समर्पित, कर्म हों मेरे शमन।।3।।

ॐ ह्रीं क्षायिक ज्ञान लब्धि प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्श गुण पर आवरण को, नाश करते जिन प्रभो।
प्रकट करते ऽनन्त दर्शन, मोक्षगामी हो विभो।।
अनन्त चतुष्टय प्रभु पाए, चरण में उनके नमन्।
अर्घ्य हम करते समर्पित, कर्म हों मेरे शमन।।4।।

ॐ ह्रीं क्षायिक दर्शन लब्धि प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाश करके कर्म बाधक, दान में जो भी रहा।
विघ्न करता है सदा ही, जैन आगम में कहा।।
दान क्षायिक प्राप्त करके, कर रहे जीवन चमन।
अर्घ्य हम करते समर्पित, कर्म हों मेरे शमन।।5।।

ॐ ह्रीं क्षायिक दान लब्धि प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म बाधक लाभ में जो, नाश उसको कर दिए।
चाह न रखते कभी जो, लाभ पाने के लिए।।
लाभ क्षायिक प्राप्त करके, कर रहे जीवन चमन।
अर्घ्य हम करते समर्पित, कर्म हों मेरे शमन।।6।।

ॐ ह्रीं क्षायिक लाभ लब्धि प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भोग में बाधक रहा जो, कर्म का करते शमन।
इन्द्रिय मन की विकलता, को किया जिसने दमन।।
भोग क्षायिक प्राप्त करके, कर रहे जीवन चमन।
अर्घ्य हम करते समर्पित, कर्म हों मेरे शमन।।7।।

ॐ ह्रीं क्षायिक भोग लब्धि प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो सदा उपभोग करने, में विघन करता रहा।
वह कर्म घाती विघ्न कारक, जैन आगम में कहा।।

प्रकट कर उपभोग क्षायिक, कर रहे जीवन चमन।
अर्घ्य हम करते समर्पित, कर्म हों मेरे शमन ।।8।।

ॐ ह्रीं क्षायिक उपभोग सम्यक्त्व लब्धि प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

विघ्न सारे नाश करके, बल अनन्त प्रकटाए हैं।
सुर असुर चरणों में आके, भक्ति से सिर नाए हैं।।
अनन्त चतुष्टय प्रभु पाए, चरण में उनके नमन।
अर्घ्य हम करते समर्पित, कर्म हों मेरे शमन।।9।।

ॐ ह्रीं क्षायिक वीर्य लब्धि प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **जिन साधु निर्ग्रन्थ हैं, रत्नत्रय के कोष।**
उनका गुण गाकर मिले, विशद आत्म सन्तोष।।10।।

ॐ ह्रीं क्षायिक नव लब्धि प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टादश दोष रहित जिन के अर्घ्य

दोहा– **दोष अठारह से रहित, होते हैं जिनदेव।**
पुष्पाञ्जलि से पूजकर, करूँ चरण की सेव।।

द्वितीयवलयस्योपरि–पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(द्वितीय वलय पर पुष्पाञ्जलि क्षेपण करें)

स्थापना

नेमिनाथ के श्री चरणों में, भव्य जीव आ पाते हैं।
तीर्थंकर जिन के दर्शन से, सर्व कर्म कट जाते हैं।।
गिरि गिरनार के ऊपर श्रीजिन, को हम शीश झुकाते हैं।
हृदय कमल के सिंहासन पर, आह्वानन् कर तिष्ठाते हैं।।
राहु अरिष्ट ग्रह शांत करो प्रभु, हमने तुम्हें पुकारा है।
हमको प्रभु भव से पार करो, तुम बिन न कोई हमारा है।।

ॐ ह्रीं सर्व सर्वमंगलदायक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् इति आह्वानन्। अत्र–तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।।

(चाल छन्द)

जो कर्म घातिया नाशे, अरु केवलज्ञान प्रकाशे।
वो क्षुधा व्याधि को खोवे, न कवलाहारी होवे।।
हे जिनवर ! जग हितकारी, जन जन के करुणाकारी।
जो वीतरागता धारे, वे ही आराध्य हमारे।।1।।

ॐ ह्रीं क्षुधा दोष विनाशक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु घाती कर्म नशावें, अरु केवलज्ञान जगावें।
वह तृषा वेदना खोवें, वे व्याकुल कभी न होवें।।
हे जिनवर ! जग हितकारी, जन जन के करुणाकारी।
जो वीतरागता धारे, वे ही आराध्य हमारे।।2।।

ॐ ह्रीं तृषा दोष विनाशक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो भव बाधाएँ जीते, नित आत्म सरस को पीते।
प्रभु अन्तिम जन्म को पाए, उनके गुण हमने गाए।।
हे जिनवर ! जग हितकारी, जन जन के करुणाकारी।
जो वीतरागता धारे, वे ही आराध्य हमारे।।3।।

ॐ ह्रीं जन्म दोष विनाशक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु जरा रोग को नाशा, न रही कोई भी आशा।
उनकी हम महिमा गाते, चरणों में शीश झुकाते।।
हे जिनवर ! जग हितकारी, जन जन के करुणाकारी।
जो वीतरागता धारे, वे ही आराध्य हमारे।।4।।

ॐ ह्रीं जरा दोष विनाशक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन मोहक द्रव्य घनेरे, अध्रुव सब कोई न मेरे।
प्रभु विस्मय कभी न करते, न आह कभी भी भरते।।
हे जिनवर ! जग हितकारी, जन जन के करुणाकारी।
जो वीतरागता धारे, वे ही आराध्य हमारे।।5।।

ॐ ह्रीं विस्मय दोष विनाशक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

न शत्रु कोई हमारे, हम हैं इस जग से न्यारे।
यह जान अरति न करते, जन जन में समता धरते।।

हे जिनवर ! जग हितकारी, जन जन के करुणाकारी।
जो वीतरागता धारे, वे ही आराध्य हमारे।।6।।

ॐ ह्रीं अरति दोष विनाशक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षण भंगुर है जग सारा, इसमें न कोई हमारा।
यह जान खेद न करते, समता में सदा विचरते।।
हे जिनवर ! जग हितकारी, जन जन के करुणाकारी।
जो वीतरागता धारे, वे ही आराध्य हमारे।।7।।

ॐ ह्रीं खेद दोष विनाशक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन में कई दोष भरे हैं, चेतन से पूर्ण परे हैं।
प्रभु रोग दोष के नाशी, हैं आतम ज्ञान प्रकाशी।।
हे जिनवर ! जग हितकारी, जन जन के करुणाकारी।
जो वीतरागता धारे, वे ही आराध्य हमारे।।8।।

ॐ ह्रीं रोग दोष विनाशक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनको न वियोग सतावे, नित शांत भाव को पावें।
प्रभु शोक दोष के नाशी, हैं आतम ज्ञान प्रकाशी।।
हे जिनवर ! जग हितकारी, जन जन के करुणाकारी।
जो वीतरागता धारे, वे ही आराध्य हमारे।।9।।

ॐ ह्रीं शोक दोष विनाशक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानादि आठ महामद, जो नाश पाए उत्तम पद।
प्रभु–मद से हीन कहे हैं, उनके न दोष रहे हैं।।
हे जिनवर ! जग हितकारी, जन जन के करुणाकारी।
जो वीतरागता धारे, वे ही आराध्य हमारे10।।

ॐ ह्रीं मद दोष विनाशक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है मोह महाबलशाली, जिसकी है कथा निराली।
प्रभु मोह महामद नाशी, हैं सम्यक्ज्ञान प्रकाशी।।
जिनवर हैं जग उपकारी, इस जग में मंगलकारी।
हम जिनवर के गुण गाते, अरु सादर शीश झुकाते।।11।।

ॐ ह्रीं मोह दोष विनाशक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं सात महाभय भारी, जिससे है जीव दुखारी।
प्रभु ने भय सभी भगाए, अरु निर्भयता को पाए ।।
जिनवर हैं जग उपकारी, इस जग में मंगलकारी।
हम जिनवर के गुण गाते, अरु सादर शीश झुकाते ।।12।।

ॐ ह्रीं भय दोष विनाशक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूले निद्रा में प्राणी, यह कहती है जिनवाणी।
प्रभु हैं निद्रा से खाली, जो हैं अति-महिमाशाली।।
जिनवर हैं जग उपकारी, इस जग में मंगलकारी।
हम जिनवर के गुण गाते, अरु सादर शीश झुकाते ।।13।।

ॐ ह्रीं निद्रा दोष विनाशक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चिन्ता तो चिता कही है, प्राणी को सता रही है।
प्रभु चिन्ता कभी न करते, औरों की चिंता हरते।।
जिनवर हैं जग उपकारी, इस जग में मंगलकारी।
हम जिनवर के गुण गाते, अरु सादर शीश झुकाते ।।14।।

ॐ ह्रीं चिन्ता दोष विनाशक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन परमौदारिक पाये, उससे न स्वेद बहाए।
प्रभु स्वेद दोष से खाली, जग में अति महिमाशाली ।।
जिनवर हैं जग उपकारी, इस जग में मंगलकारी।
हम जिनवर के गुण गाते, अरु सादर शीश झुकाते ।।15।।

ॐ ह्रीं स्वेद दोष विनाशक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु वीतरागता धारे, हैं जग में जग से न्यारे।
जो राग-दोष को छोड़े, जग जन से मुख भी मोड़े।।
जिनवर हैं जग उपकारी, इस जग में मंगलकारी।
हम जिनवर के गुण गाते, अरु सादर शीश झुकाते ।।16।।

ॐ ह्रीं राग-दोष विनाशक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो क्रोध कषाय के नाशी, प्रभु निज आतम के वासी।
प्रभु द्वेष भाव निरवारें, सब कर्म शत्रु भी हारें।।

जिनवर हैं जग उपकारी, इस जग में मंगलकारी।
हम जिनवर के गुण गाते, अरु सादर शीश झुकाते ।।17।।

ॐ ह्रीं द्वेष दोष विनाशक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु दश प्राणों के नाशी, हैं अजर अमर अविनाशी।
जो मरण रोग परिहारे, प्रभु नाशें कर्म हैं सारे।।
जिनवर हैं जग उपकारी, इस जग में मंगलकारी।
हम जिनवर के गुण गाते, अरु सादर शीश झुकाते ।।18।।

ॐ ह्रीं मरण दोष विनाशक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **दोष अठारह रहित हैं, नेमिनाथ भगवान।**
पूजा करके भाव से, करते हम गुणगान।।

ॐ ह्रीं अष्टादश दोष रहित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौंतीस अतिशय के अर्घ्य

दोहा- **चौंतिस अतिशय प्राप्त कर, हुए धर्म के नाथ।**
विशद भाव से झुकाते, प्रभु चरणों में माथ।।

तृतीयवलयस्योपरि-पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(तीसरे वलय पर पुष्पाञ्जलि क्षेपण करें)

स्थापना

नेमिनाथ के श्री चरणों में, भव्य जीव आ पाते हैं।
तीर्थंकर जिन के दर्शन से, सर्व कर्म कट जाते हैं।।
गिरि गिरनार के ऊपर श्रीजिन, को हम शीश झुकाते हैं।
हृदय कमल के सिंहासन पर, आह्वानन् कर तिष्ठाते हैं।।
राहु अरिष्ट ग्रह शांत करो प्रभु, हमने तुम्हें पुकारा है।
हमको प्रभु भव से पार करो, तुम बिन न कोई हमारा है।।

ॐ ह्रीं सर्व सर्वमंगलदायक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् इति आह्वानन्। अत्र-तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।।

जन्म के 10 अतिशय *(गीता छन्द)*

तन रहित है स्वेद से, अतिशय प्रभु प्रगटाए हैं।
देवेन्द्र आदि इन्द्र शत, चरणों में शीश झुकाए हैं।।
जन्म के अतिशय जिनेश्वर, स्वयं ही दश पाए हैं।
प्रभु चरणों में 'विशद', हम भाव से सिरनाए हैं।।1।।

ॐ ह्रीं स्वेद रहित सहजातिशयधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मल रहित तन है प्रभु का, अमल अति सुखकार है।
अतिशय स्वयं होता प्रभु का, धर्म का आधार है।।
जन्म के अतिशय जिनेश्वर, स्वयं ही दस पाए हैं।
प्रभु चरणों में 'विशद', हम भाव से सिरनाए हैं।।2।।

ॐ ह्रीं मल रहित सहजातिशयधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समचतुरस्र संस्थान प्रभु जी, जन्म से पाते महा।
नहीं घट बढ़ अंग कोई, प्रभु का अतिशय रहा।।
जन्म के अतिशय जिनेश्वर, स्वयं ही दश पाए हैं।
प्रभु चरणों में 'विशद', हम भाव से सिरनाए हैं।।3।।

ॐ ह्रीं समचतुरस्र संस्थान सहजातिशयधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

वज्र वृषभ नाराच संहनन, जन्म से उपजाए हैं।
हड्डियों का जोड़ अतिशय, श्रेष्ठ प्रभु प्रगटाए हैं।।
जन्म के अतिशय जिनेश्वर, स्वयं ही दश पाए हैं।
प्रभु चरणों में 'विशद', हम भाव से सिरनाए हैं।।4।।

ॐ ह्रीं वज्र वृषभ नाराच संहनन सहजातिशयधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

तन सुगन्धित और सुरभित, प्रभुजी शुभ पाए हैं।
सुर असुर चरणों में आकर, गीत मंगल गाए हैं।।
जन्म के अतिशय जिनेश्वर, स्वयं ही दश पाए हैं।
प्रभु चरणों में 'विशद', हम भाव से सिरनाए हैं।।5।।

ॐ ह्रीं सुगन्धित तन सहजातिशयधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रूप अतिशय महा मनहर, प्राप्त कर सुख पाए हैं।
कामदेव अरु चक्रवर्ति, देखकर शरमाए हैं।।
जन्म के अतिशय जिनेश्वर, स्वयं ही दश पाए हैं।
प्रभु चरणों में 'विशद', हम भाव से सिरनाए हैं।।6।।

ॐ ह्रीं अतिशय रूप सहजातिशयधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन में सहस्र इक आठ लक्षण, प्रभु जी प्रगटाए हैं।
सहस्राष्ट प्रभु नामधारी, लोक में कहलाए हैं।।
जन्म के अतिशय जिनेश्वर स्वयं ही दश पाए हैं।
प्रभु चरणों में 'विशद', हम भाव से सिरनाए हैं।।7।।

ॐ ह्रीं सहस्र अष्ट लक्षण सहजातिशयधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

रक्त तन का श्वेत सुन्दर, प्रभुजी शुभ पाए हैं।
महत महिमा वात्सल्य की, प्रभुजी प्रगटाए हैं।।
जन्म के अतिशय जिनेश्वर स्वयं ही दश पाए हैं।
प्रभु चरणों में 'विशद', हम भाव से सिरनाए हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्वेत रुधिर सहजातिशयधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

प्रिय हित-मित वचन प्रभु के, जगत में सुखकार हैं।
धर्म के आधार हैं शुभ, जगत मंगलकार हैं।।
जन्म के अतिशय जिनेश्वर स्वयं ही दश पाए हैं।
प्रभु चरणों में 'विशद', हम भाव से सिरनाए हैं।।9।।

ॐ ह्रीं हित मित प्रिय वचन सहजातिशयधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

बल अनंतानंत पाए, नहीं कोई पार है।
पुण्य का फल सुयश जग में, रहा अपरंपार है।।
जन्म के अतिशय जिनेश्वर स्वयं ही दश पाए हैं।
प्रभु चरणों में 'विशद', हम भाव से सिरनाए हैं।।10।।

ॐ ह्रीं अनन्त बल सहजातिशयधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

केवलज्ञान के 10 अतिशय

शतक योजन दूर तक, प्रभु का जहाँ आसन रहा।
हो नहीं दुर्भिक्षता शुभ, क्षेत्र अति निर्मल कहा।।
ज्ञान केवल प्रकट होते, स्वयं दश अतिशय जगें।
दर्श करके भव्य प्राणी, मोक्ष मारग में लगें।।11।।

ॐ ह्रीं योजन शत चतुष्टय सुभिक्षत्व घातिक्षयजातिशय धारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गगन में ही गमन होता, विशद यह अतिशय रहा।
पूर्व के शुभ पुण्य का फल, जैन आगम में कहा।।
ज्ञान केवल प्रकट होते, स्वयं दश अतिशय जगें।
दर्श करके भव्य प्राणी, मोक्ष मारग में लगें।।12।।

ॐ ह्रीं आकाश गमन घातिक्षयजातिशय धारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

हो नहीं उपसर्ग कोई, ज्ञान केवल होय तब।
कृत पशु नर सुर अचेतन, नाश होवें आप सब।।
ज्ञान केवल प्रकट होते, स्वयं दश अतिशय जगें।
दर्श करके भव्य प्राणी, मोक्ष मारग में लगें।।13।।

ॐ ह्रीं उपसर्गाभाव घातिक्षयजातिशय धारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

हो नहीं अदया वहां पर, प्रभू का आसन जहाँ।
धर्म का शुभ फल परस्पर, मित्रता होवे वहाँ।।
ज्ञान केवल प्रकट होते, स्वयं दश अतिशय जगें।
दर्श करके भव्य प्राणी, मोक्ष मारग में लगें।।14।।

ॐ ह्रीं अदयाभाव घातिक्षयजातिशय धारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

क्षुधा से पीड़ित दिखाई, दे रहा संसार है।
नाश की है क्षुधा पीड़ा, नहीं कवलाहार है।।
ज्ञान केवल प्रकट होते, स्वयं दश अतिशय जगें।
दर्श करके भव्य प्राणी, मोक्ष मारग में लगें।।15।।

ॐ ह्रीं कवलाहार घातिक्षयजातिशय धारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शोभते हैं जिन प्रभु जी, समवशरण के बीच में।
दे रहे दर्शन चतुर्दिक, रहें न भव कीच में।।
ज्ञान केवल प्रकट होते, स्वयं दश अतिशय जगें।
दर्श करके भव्य प्राणी, मोक्ष मारग में लगें।।16।।

ॐ ह्रीं चतुर्मुखत्व घातिक्षयजातिशय धारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

सकल विद्या के अधीपति, प्रभुजी ईश्वर कहे।
कर्म के नाशक प्रकाशक, प्रभु परमेश्वर रहे।।
ज्ञान केवल प्रकट होते, स्वयं दश अतिशय जगें।
दर्श करके भव्य प्राणी, मोक्ष मारग में लगें।।17।।

ॐ ह्रीं सर्व विद्येश्वरत्व घातिक्षयजातिशय धारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

नहीं छाया पड़े तन की, परमौदारिक तन रहा।
रहा विस्मय एक यह भी, ज्ञान का अतिशय कहा।।
ज्ञान केवल प्रकट होते, स्वयं दश अतिशय जगें।
दर्श करके भव्य प्राणी, मोक्ष मारग में लगें।।18।।

ॐ ह्रीं छायारहित घातिक्षयजातिशय धारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

केश अरु नख नहीं बढ़ते, ज्ञान की महिमा कही।
रहें ज्यों के त्यों सदा ही, धर्म की गरिमा रही।।
ज्ञान केवल प्रकट होते, स्वयं दश अतिशय जगें।
दर्श करके भव्य प्राणी, मोक्ष मारग में लगें।।19।।

ॐ ह्रीं समान नख केशत्व घातिक्षयजातिशय धारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

14 देवकृत अतिशय

रही भाषा अर्द्धमागध, सभी को सुखकार है।
वाणी है ऊँकारमय शुभ, धर्म की आधार है।।
देवकृत अतिशय हैं चौदह, महिमा प्रभु की गा रहे।
भाव से चरणों प्रभु के, शीश विशद झुका रहे।।21।।

ॐ ह्रीं सर्वार्धमागधी भाषा देवोपनीतातिशयधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

जगत के सब प्राणियों में, भाव मैत्री के जगें।
धर्म के दीपक जहाँ में, आप ही शुभ जग–मगें।।
देवकृत अतिशय हैं चौदह, महिमा प्रभु की गा रहे।
भाव से चरणों प्रभु के, शीश विशद झुका रहे।।22।।

ॐ ह्रीं सर्व मैत्री भाव देवोपनीतातिशयधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

षट् ऋतु के फूल फल शुभ, स्वयं ही खिलते वहाँ।
विशद ज्ञानी जिनवरों का, आगमन होवे जहाँ।।
देवकृत अतिशय हैं चौदह, महिमा प्रभु की गा रहे।
भाव से चरणों प्रभु के, शीश विशद झुका रहे।।23।।

ॐ ह्रीं सर्वर्तुफलादि देवोपनीतातिशयधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

भूमि दर्पण वत् चमकती, पद पड़ें प्रभु के जहाँ।
विशद ज्ञानी जिनवरों का, गमन होता है वहाँ।।
देवकृत अतिशय हैं चौदह, महिमा प्रभु की गा रहे।
भाव से चरणों प्रभु के, शीश विशद झुका रहे।।24।।

ॐ ह्रीं आदर्शतल प्रतिमा रत्नमई देवोपनीतातिशयधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पवन सुरभित शुभ सुगन्धित, बहे अति मन मोहनी।
भव्य जीवों की सुभाषित, रहे अति शुभ सोहनी।।
देवकृत अतिशय हैं चौदह, महिमा प्रभु की गा रहे।
भाव से चरणों प्रभु के, शीश विशद झुका रहे।।25।।

ॐ ह्रीं सुगन्धित विरहण मनुगत वायुत्व देवोपनीतातिशयधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगत में आनन्द कारण, है प्रभु का आगमन।
भव्य प्राणी भाव से, करते चरण शत्–शत् नमन।।
देवकृत अतिशय हैं चौदह, महिमा प्रभु की गा रहे।
भाव से चरणों प्रभु के, शीश विशद झुका रहे।।26।।

ॐ ह्रीं सर्वानंदकारक देवोपनीतातिशयधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

भूमि कंटक रहित हो शुभ, जहाँ प्रभु करते गमन।
भव्यप्राणी भाव से, करते चरण शत्–शत् नमन।।
देवकृत अतिशय हैं चौदह, महिमा प्रभु की गा रहे।
भाव से चरणों प्रभु के, शीश विशद झुका रहे।।27।।

ॐ ह्रीं वायुकुमारोपशमित धूलि कंटकादि देवोपनीतातिशयधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नभ में जय जयकार होता, जीव सुखमय हों सभी।
धर्म की शुभ भावना से, दुःखमय न हों कभी।।
देवकृत अतिशय हैं चौदह, महिमा प्रभु की गा रहे।
भाव से चरणों प्रभु के, शीश विशद झुका रहे।।28।।

ॐ ह्रीं आकाशे जय–जयकार देवोपनीतातिशयधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गंधोदक की वृष्टि करते, देव मिलकर के सभी।
झूमकर के नृत्य करते, भाव से सुर नर सभी।।
देवकृत अतिशय हैं चौदह, महिमा प्रभु की गा रहे।
भाव से चरणों प्रभु के, शीश विशद झुका रहे।।29।।

ॐ ह्रीं मेघकुमारकृतगंधोदक वृष्टि देवोपनीतातिशयधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु के पद तल कमल की, देवगण रचना करें।
हों जगत जन सुखी सारे, और की बाधा हरें।।
देवकृत अतिशय हैं चौदह, महिमा प्रभु की गा रहे।
भाव से चरणों प्रभु के, शीश विशद झुका रहे।।30।।

ॐ ह्रीं चरण कमल तल रचित स्वर्ण कमल देवोपनीतातिशयधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गगन शुभ हो जाए निर्मल, जहाँ प्रभु का हो गमन।
सब दिशाओं को स्वयं ही, देव कर देते चमन।।

देवकृत अतिशय हैं चौदह, महिमा प्रभु की गा रहे।
भाव से चरणों प्रभु के, शीश विशद झुका रहे।।31।।

ॐ ह्रीं शरदकालवन्निर्मल गगन देवोपनीतातिशयधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब दिशाएँ धूम से हों, रहित निर्मल अति विमल।
आगमन हो जहाँ प्रभु का, जगत् हो जाए अमल।।
देवकृत अतिशय हैं चौदह, महिमा प्रभु की गा रहे।
भाव से चरणों प्रभु के, शीश विशद झुका रहे।।32।।

ॐ ह्रीं सर्वानंद कारक देवोपनीतातिशयधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

धर्मचक्र चलता है आगे, प्रभु का जब हो गमन।
भव्य जन भक्ति से आकर, करें चरणों में नमन।।
देवकृत अतिशय हैं चौदह, महिमा प्रभु की गा रहे।
भाव से चरणों प्रभु के, शीश विशद झुका रहे।।33।।

ॐ ह्रीं अग्रे धर्मचक्र देवोपनीतातिशयधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

अष्ट मंगल द्रव्य लेकर, देव भक्ति भाव से।
कर रहे अर्चा प्रभु की, मिल सभी सुर चाव से।।
देवकृत अतिशय हैं चौदह, महिमा प्रभु की गा रहे।
भाव से चरणों प्रभु के, शीश विशद झुका रहे।।34।।

ॐ ह्रीं अष्टमंगलद्रव्य देवोपनीतातिशयधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

बाह्य लक्ष्मी प्राप्त कर प्रभु, समवशरण विराजते।
रत्नकई निधियाँ जो पाके, अधर में ही राजते।।
लोकवर्ती इन्द्र सब, भक्ति में आकर झूमते।
भाव से पूजा करें अरु, चरण रज को चूमते।।35।।

ॐ ह्रीं वाह्य लक्ष्मी समवशरणादि विभूति प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

अनंत चतुष्टय आदि लक्ष्मी, पाए अन्तर की निधि।
भव्य गुण पाए अनेकों, प्रभु पाए सन्निधि।।

लोकवर्ती इन्द्र सब, भक्ति में आकर झूमते।
भाव से पूजा करें अरु, चरण रज को चूमते।।36।।

ॐ ह्रीं अभ्यंतर लक्ष्मी अनंत चतुष्टयादि विभूति प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **चौंतिस अतिशय प्राप्त कर, उभयलक्ष्मी पाय।**
समवशरण में राजते, तीर्थंकर जिनराय।।

ॐ ह्रीं चौंतीस अतिशय उभय लक्ष्मी प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्व.स्वाहा।

चौसठ ऋद्धि के अर्घ्य

दोहा– **चौसठ ऋद्धि के शुभम, प्रातिहार्य के अर्घ्य।**
चढ़ा रहे हम भाव से, पाने सुपद अनर्घ।।

चतुर्थवलयस्योपरि– पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(चौथे वलय पर पुष्पाञ्जलि क्षेपण करें)

स्थापना

नेमिनाथ के श्री चरणों में भव्य जीव आ पाते हैं।
तीर्थंकर जिन के दर्शन से सर्व कर्म कट जाते हैं।।
गिरि गिरनार के ऊपर श्रीजिन, को हम शीश झुकाते हैं।
हृदय कमल के सिंहासन पर, आह्वानन कर तिष्ठाते हैं।।
राहु अरिष्ट ग्रह शांत करो प्रभु, हमने तुम्हें पुकारा है।
हमको प्रभु भव से पार करो, तुम बिन न कोई हमारा है।।

ॐ ह्रीं सर्व सर्वमंगलदायक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् इति आह्वाननं। अत्र–तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।।

(ताटंक छंद)

द्वादश तप जो तपते मुनिवर, ऋद्धी पाते कई प्रकार।
अवधि ज्ञान षट् भेद युक्त शुभ, जिनका गुण प्रत्यय आधार।।
देशावधि परमा सर्वावधि, रूपी द्रव्य दिखाते हैं।
संयम तपस्त्याग से मुनिवर, ऋद्धी यह प्रगटाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं अवधि बुद्धि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कैसा चिंतन करे कोई भी, मनपर्यय से होवे ज्ञात।
ऋजू–मति अरु विपुलमति द्वय, भेद रूप जग में विख्यात।।
अवधि ज्ञान से सूक्ष्म विषय भी, मन:पर्यय हमें दिखाते हैं।
संयम तपस्त्याग से मुनिवर, ऋद्धी यह प्रगटाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं मन:पर्यय बुद्धि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चउ कर्म घातिया क्षय होते, शुभ केवलज्ञान प्रकट होता।
दर्पण वत् लोकालोक दिखे, सब कर्म कालिमा को खोता।।
ऋद्धी शुभ केवलज्ञान जगे, तब अर्हत् पद को पाते हैं।
संयम तपस्त्याग से मुनिवर, ऋद्धी यह प्रगटाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं केवल बुद्धि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ शब्द श्रृंखला के द्वारा, जब एक शब्द का ज्ञान किये।
हो प्रतिभाषित सारा आगम, जागे तब श्रुत सम्पूर्ण हिये।।
है कल्पवृक्ष सम बुद्धि बीज, पाने का भाव बनाते हैं।।
संयम तपस्त्याग से मुनिवर, ऋद्धी यह प्रगटाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं बीज बुद्धि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्यों धान्य भरे कोठे में कई, फिर भी वह भिन्न भिन्न रहते।
मिश्रण बिन बुद्धि से आगम, वह पृथक–पृथक ही मुनि कहते।।
उन कोष्ठ बुद्धि ऋद्धि धारी, मुनिवर को शीश झुकाते हैं।
संयम तपस्त्याग से मुनिवर, ऋद्धी यह प्रगटाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं कोष्ठ बुद्धि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन ग्रन्थों में पद हैं अनेक, मुनि मात्र एक पद ज्ञान करें।
पूर्ण ग्रन्थ का सार प्राप्त, करके जग का अज्ञान हरें।।
है श्रेष्ठ ऋद्धि पादानुसारिणी, जिनवर महिमा बतलाते हैं।
संयम तपस्त्याग से मुनिवर, ऋद्धी यह प्रगटाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं पादानुसारिणी बुद्धि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह श्रवण का विस्मय है विशेष, समझे नर पशु की भाषा को।
वह नौ योजन की जान रहे, त्यागे सब मन की आशा को।।
जो अक्षर और अनक्षर मय, द्वय भाषा में समझाते हैं।
संयम तपस्त्याग से मुनिवर, यह श्रेष्ठ ऋद्धियाँ पाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं संभिन्न–संश्रोतृ बुद्धि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रसना इन्द्रिय की दीवानी, दिखती यह सारी जगती है।
गुरु नीरस व्रत उपवास करें, शायद उन्हें भूख न लगती है।।
नौ योजन दूर की वस्तु का, गुरु रसास्वाद पा जाते हैं।
संयम तपस्त्याग से मुनिवर, ऋद्धी यह प्रगटाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं दूरास्वादन बुद्धि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है विषय अष्ट स्पर्शन के, जग के प्राणी सब पाते हैं।
जो अशुभ और शुभ रूप रहे, छूने से ज्ञान कराते हैं।।
नौ योजन दूर की वस्तु का, स्पर्श गुरु पा जाते हैं।
संयम तपस्त्याग से मुनिवर, ऋद्धी यह प्रगटाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं दूरस्पर्शन बुद्धि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुर्गन्ध सुगन्ध घ्राण के द्वय, प्रभु ने यह विषय बताए हैं।
जग के प्राणी उनको पाकर, दु:ख सुख पाकर अकुलाए हैं।।
नौ योजन दूर कि वस्तु का, गुरु गंध ज्ञान पा जाते हैं।
संयम तपस्त्याग से मुनिवर, ऋद्धी यह प्रगटाते हैं।।10।।

ॐ ह्रीं दूरगन्ध ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आतापन आदि तप करने, मुनिवर गिरि ऊपर जाते हैं।
फिर आतम रस में लीन हुए, अरु आत्म सरस रस पाते हैं।।
उत्कृष्ट विषय कर्णेन्द्रिय का, उसकी शक्ति उपजाते हैं।
संयम तपस्त्याग से मुनिवर, ऋद्धी यह प्रगटाते हैं।।11।।

ॐ ह्रीं दूर श्रवण ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नेत्रेन्द्रिय का उत्कृष्ट विषय, तप करके जो प्रकटाते हैं।
नेत्रों की शक्ति से ज्यादा, वह आतम शक्ति बढ़ाते हैं।।
यह श्रेष्ठ ऋद्धियाँ पाकर भी मुनि, हर्ष खेद न पाते हैं।
संयम तपस्त्याग से मुनिवर, ऋद्धी यह प्रगटाते हैं।।12।।

ॐ ह्रीं दूरावलोकन ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अविराम ज्ञान उपयोग करें, विश्राम कभी न करते हैं।
प्रज्ञा को स्वयं विकासित कर, अज्ञान तिमिर को हरते हैं।।
होते महान प्रज्ञा धारी, गुरु प्रज्ञा श्रमण कहाते हैं।
संयम तपस्त्याग से मुनिवर, ऋद्धी यह प्रगटाते हैं।।13।।

ॐ ह्रीं प्रज्ञाश्रमण ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रुत ज्ञान का विषय अनन्तक है, जो लोकालोक दिखाता है।
अष्टांग निमित्तक है महान, शुभ अशुभ का ज्ञान कराता है।।
स्वर-अंग भौम व्यंजन आदि, इनसे पहिचाने जाते हैं।
संयम तपस्त्याग से मुनिवर, ऋद्धी यह प्रगटाते हैं।।14।।

ॐ ह्रीं अष्टांग निमित्त बुद्धि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कोइ कितना ज्ञानी आ जाए, पर उनसे जीत न पाता है।
हैं वाद-विवाद कुशल मुनिवर, उनके आगे झुक जाता है।।

जिन धर्म दिवाकर वे मुनिवर, जिन धर्म ध्वजा फहराते हैं।
संयम तपस्त्याग से मुनिवर, ऋद्धी यह प्रगटाते हैं।।15।।

ॐ ह्रीं वादित्व बुद्धि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो चिंतन ध्यान मनन करते, नित स्वाध्याय में लीन रहे।
वह ग्यारह अंग पूर्व चौदह के, ज्ञान में सदा प्रवीण रहे।।
हम द्वादशांग का ज्ञान करें, यह विशद भावना भाते हैं।
संयम तपस्त्याग से मुनिवर, ऋद्धी यह प्रगटाते हैं।।16।।

ॐ ह्रीं चतुर्दश पूर्व ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशम पूर्व पूरा होते ही, महा विद्यायें आ जावें।
शुभ कार्य हेतु वह आज्ञा मांगे, मुनि के मन वह न भावें।।
श्रुत का चिंतन करते करते, श्रुत धारी बन जाते हैं।
संयम तपस्त्याग से मुनिवर, ऋद्धी यह प्रगटाते हैं।।17।।

ॐ ह्रीं दशम पूर्व ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन चेतन का भेद जानकर, लखते हैं आतम का रूप।
जानें ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय को, निज आतम का सत्य स्वरूप।।
प्रत्येक बुद्धि ऋद्धि के धारी, भेद विज्ञान जगाते हैं।
संयम तपस्त्याग से मुनिवर, ऋद्धी यह प्रगटाते हैं।।18।।

ॐ ह्रीं प्रत्येक बुद्धि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तपधारी मुनिवर के आगे, ऋद्धी यह शीश झुकाती है।
मुनिवर लेते आहार जहाँ वहाँ, जनता सब जिम जाती है।।
अक्षीण संवास ऋद्धी के धारी मुनिवर अतिशय कारी हैं।
हम पूजा करते भावसहित, चरणों में ढोक हमारी है।।19।।

ॐ ह्रीं अक्षीण संवास ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

थोड़ी सी भूमि पर बैठें, कइ जीव अनेकों कष्ट विहीन।
दर्श करें मुनिवर के आकर, भक्ती में होकर लवलीन।।
अक्षीण महानस ऋद्धि के धारी, मुनिवर अतिशय कारी हैं।
हम पूजा करते भावसहित, चरणों में ढोक हमारी है।।20।।

ॐ ह्रीं अक्षीण महानस ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौबोला छन्द)

नभ चारण ऋद्धि धारी मुनि, नभ में पग-पग गमन करें।
सौ यौजन तक दूर क्षेत्र की, सभी आपदाशमन करें।।
नभ चारण ऋद्धिधर मुनि की, पूजा करते भाव विभोर।
सुखमय होवें जीव सभी अरु, मंगल होवे चारों ओर।।21।।

ॐ ह्रीं नभ चारण ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चारण ऋद्धि धारी मुनि, जल के ऊपर गमन करें।
जल जन्तु न मरे कोई भी, उनकी बाधा शमन करें।।
जल चारण ऋद्धिधर मुनि की, पूजा करते भाव विभोर।
सुखमय होवें जीव सभी अरु, मंगल होवे चारों ओर।।22।।

ॐ ह्रीं जल चारण ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नभ में चलते हुए मुनी के, घुटने मुड़ते नहीं कभी।
चऊ अंगुल पृथ्वी से ऊपर, धर्म भाव युत रहें सभी।।
जंघा चारण ऋद्धिधर मुनि की, पूजा करते भाव विभोर।
सुखमय होवें जीव सभी अरु, मंगल होवे चारों ओर।।23।।

ॐ ह्रीं जंघा चारण ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प फलों पत्रों पर चलते, उनसे जीव न दुख पाते।
चारण ऋद्धी धारी मुनिवर, आगे बढ़ते ही जाते।।
पुष्प पत्र चारण मुनिवर की, पूजा करते भाव विभोर।
सुखमय होवें जीव सभी अरु, मंगल होवे चारों ओर।।24।।

ॐ ह्रीं पुष्प पत्र चारण ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि चारण ऋद्धीधर मुनि, अग्नि के ऊपर चलते।
अग्नि जीव को कष्ट न होता, मुनि के पैर नहीं जलते।।
अग्नि चारण ऋद्धीधर की, पूजा करते भाव विभोर।
सुखमय होवें जीव सभी अरु, मंगल होवे चारों ओर।।25।।

ॐ ह्रीं अग्नि चारण ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेघों के ऊपर चलते पर, कोई जीव न मरते हैं।
शुभ मेघ चारिणी ऋद्धिधर से, जीव खेद न करते हैं।।
मेघ चारिणी ऋद्धीधर की, पूजा करते भाव विभोर।
सुखमय होवें जीव सभी अरु, मंगल होवे चारों ओर।।26।।

ॐ ह्रीं मेघ चारण ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कोमल तन्तु के ऊपर मुनि, निर्भय चलते जाते हैं।
फिर भी तन्तू नहीं टूटता, उनको सब सिर नाते हैं।।
तन्तू चारण ऋद्धीधर की, पूजा करते भाव विभोर।
सुखमय होवें जीव सभी अरु, मंगल होवे चारों ओर।।27।।

ॐ ह्रीं तन्तु चारण ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रवि चन्द्र नक्षत्रों द्वारा, ज्योर्तिमय है सारा लोक।
काल देखकर गमन करें शुभ, जिनके चरणों देता ढोक।।
ज्योतिष चारण ऋद्धीधर की, पूजा करते भाव विभोर।
सुखमय होवें जीव सभी अरु, मंगल होवे चारों ओर।।28।।

ॐ ह्रीं ज्योतिष चारण ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गमन करें वायु पंक्ति में, चलते हैं जो गगन मंझार।
ज्ञान ध्यान में लीन रहें नित, महिमा जिनकी अपरम्पार।।

वायु चारण ऋद्धीधर की, पूजा करते भाव विभोर।
सुखमय होवें जीव सभी अरु, मंगल होवे चारों ओर।।29।।

ॐ ह्रीं वायु चारण ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

अणु बराबर छेद में, घुस जावें मुनिराज।
अणिमा ऋद्धी धारते, तारण तरण जहाज।।30।।

ॐ ह्रीं अणिमा ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो सुमेरु सम देह को, बड़ा करें मुनिराज।
महिमा ऋद्धी धारते, तारण तरण जहाज।।31।।

ॐ ह्रीं महिमा ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्क तूल सम लघू हों, तप बल से मुनिराज।
लघिमा ऋद्धी धारते, तारण तरण जहाज।।32।।

ॐ ह्रीं लघिमा ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भारी होवे लोह सम, जिनका तन तत्काल।
गरिमा ऋद्धी धारते, मुनिवर दीन दयाल।।33।।

ॐ ह्रीं गरिमा ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूमि पर रहते खड़े, छूवें सूरज चंद।
प्राप्ति ऋद्धी के धनी, मुनि रहें निर्द्वन्द।।34।।

ॐ ह्रीं प्राप्ति ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जल में मुनि यों पग धरें, ज्यों थल में चल जाएँ।
ऋद्धीधर प्राकाम्य के, ऐसी महिमा पाएँ।।35।।

ॐ ह्रीं प्राकाम्य ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग की प्रभुता प्राप्त कर, बनते ईश समान।
ऋद्धीधर ईशत्व के, जग में सर्व महान।।36।।

ॐ ह्रीं ईशत्व ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दृष्टि पड़ते मुनी की, वश में हों सब लोग।
महिमा होती यह सदा, वशित्व ऋद्धि के योग।।37।।

ॐ ह्रीं वशित्व ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घुसें छेद बिन शैल में, बाधा कोई न होय।
अप्रतिघाति ऋद्धिधर, सम न जग में कोय।।38।।

ॐ ह्रीं अप्रतिघाति ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिखते दिखते लोप हों, न हो मुनि का भान।
ऋद्धी तप से प्रकट हो, मुनि के अन्तर्धान।।39।।

ॐ ह्रीं अन्तर्धान ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इच्छित फल पाते मुनी, इच्छित रूप बनाय।
काम रूपिणी ऋद्धिधर, जग में पूजे जाँय।।40।।

ॐ ह्रीं काम रूपिणी ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौबोला छन्द)

तप में लीन रहे तपती नित, उग्र-उग्र तप तपते रोज।
दीक्षा दिन से मरण काल तक, कर उपवास बढ़े शुभ ओज।।
कर्म शत्रु तप के द्वारा ही, भाई हो पाते निर्जीण।
पूजनीय वह धन्य मुनीश्वर, जिनने कर्म किये हैं क्षीण।।41।।

ॐ ह्रीं उग्र तपोतिशय ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनशन आदि तप करने से, क्षीण होय मुनिवर की देह।
दीप्ति तपो ऋद्धि से तन की, दीप्ति बढ़े तब नि:सन्देह।।
कर्म शत्रु तप के द्वारा ही, भाई हो पाते निर्जीण।
पूजनीय वह धन्य मुनीश्वर, जिनने कर्म किये हैं क्षीण।।42।।

ॐ ह्रीं दीप्ति तपोतिशय ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप से तप ऋद्धि की वृद्धि, करते हैं करते आहार।
तन मन बल बढ़ता है लेकिन, मल धातु न होय निहार।।
कर्म शत्रु तप के द्वारा ही, भाई हो पाते निर्जीण।
पूजनीय वह धन्य मुनीश्वर, जिनने कर्म किये हैं क्षीण।।43।।

ॐ ह्रीं तप्त तपोतिशय ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिंह निष्क्रीड़ित आदि व्रतधर, व्रत पाले जो कई प्रकार।
त्याग करें उत्तम से उत्तम, महा तपों अतिशय को धार।।
कर्म शत्रु तप के द्वारा ही, भाई हो पाते निर्जीण।
पूजनीय वह धन्य मुनीश्वर, जिनने कर्म किये हैं क्षीण।।44।।

ॐ ह्रीं महातपोतिशय ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादश तप तपते हैं मुनिवर, आतापन आदि धर योग।
घोर तपो अतिशय ऋद्धिधर, हो उपसर्ग तथा कोइ रोग।।
कर्म शत्रु तप के द्वारा ही, भाई हो पाते निर्जीण।
पूजनीय वह धन्य मुनीश्वर, जिनने कर्म किये हैं क्षीण।।45।।

ॐ ह्रीं घोर तपोतिशय ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोक जयी सागर शोषण की, शक्ति पावें कई प्रकार।
घोर पराक्रम ऋद्धिधारी, पाते तप विध के आधार।।
कर्म शत्रु तप के द्वारा ही, भाई हो पाते निर्जीण।
पूजनीय वह धन्य मुनीश्वर, जिनने कर्म किये हैं क्षीण।।46।।

ॐ ह्रीं घोर पराक्रम तपोतिशय ऋद्धि धारक सर्व ऋषिश्वर पूजित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच महाव्रत त्रिय गुप्ति धर, ब्रह्मचर्य व्रत से भरपूर।
अघोर ब्रह्मचर्य ऋद्धीधार से, कलह आदि भागें सब दूर।।
कर्म शत्रु तप के द्वारा ही, भाई हो पाते निर्जीण।
पूजनीय वह धन्य मुनीश्वर, जिनने कर्म किये हैं क्षीण।।47।।

ॐ ह्रीं अघोर ब्रह्मचर्य तपोतिशय ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(त्रिभंगी छंद)

मन बल की ऋद्धी रही प्रसिद्धी, श्रुत का चिन्तन होय विशेष।
चिन्तन की शक्ती प्रभु की भक्ती, से मुहूर्त में होय अशेष।।
संयम से पावे ध्यान लगावे, आतम की शुद्धी पावे।
ऋद्धी हम पावे ज्ञान जगावें, मुनिवर के शुभ गुण गावें।।48।।

ॐ ह्रीं मनोबल ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वचनों की शक्ती प्रभु की भक्ती, करते श्रुत का उच्चारण।
हो वचन अनोखे जग में चोखे, ऋद्धि सिद्धि का हो कारण।।
मुनिवर की वाणी जग कल्याणी, कर्ण सुने तृप्ती पावें।
ऋद्धी हम पावें ज्ञान जगावें, मुनिवर के शुभ गुण गावें।।49।।

ॐ ह्रीं वचनबल ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

खड्गासन ठाड़े गर्मी-जाड़े, कष्ट नहीं कोई पावें।
तप की यह शक्ती देवे मुक्ती, अतिशय ऋद्धी दिखलावे।।
है ऋद्धी पावन जन मन भावन, मुनिवर ही इसको पावें।
ऋद्धी हम पावें ज्ञान जगावें, मुनिवर के शुभ गुण गावें।।50।।

ॐ ह्रीं श्री कायबल ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल छन्द)

मुनि तप की अग्नि जलावें, फिर सारे कर्म नशावें।
आमर्षौषधि ऋद्धीधारी, हैं सारे रोग निवारी।।
हम पूजा करने आवें, चरणों में शीश झुकावें।
सब रोग शोक मिट जावें, आशीष आपका पावें।।51।।

ॐ ह्रीं आमर्षौषधि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कफ लार थूक आ जावे, जो सारे रोग नशावे।
क्ष्वेलौषधि ऋद्धिधारी, हैं सारे रोग निवारी।।
हम पूजा करने आवें, चरणों में शीश झुकावें।
सब रोग शोक मिट जावें, आशीष आपका पावें।।52।।

ॐ ह्रीं क्ष्वेलौषधि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन में जल्ल स्वेद बनावे, वह शुभ औषधि बन जावे।
जल्लौषधि ऋद्धीधारी, हैं सारे रोग निवारी।।
हम पूजा करने आवें, चरणों में शीश झुकावें।
सब रोग शोक मिट जावें, आशीष आपका पावें।।53।।

ॐ ह्रीं जल्लौषधि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्णादि जिह्वा का मल, बन जाए औषधि मंगल।
मल्लौषधि ऋद्धीधारी, हैं सारे दोष निवारी।।
हम पूजा करने आवें, चरणों में शीश झुकावें।
सब रोग शोक मिट जावें, आशीष आपका पावें।।54।।

ॐ ह्रीं मल्लौषधि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बन जाए मूत्र मल औषधि, हर लेवे पर की व्याधि।
विडौषधि ऋद्धीधारी, होते जग मंगलकारी।।
हम पूजा करने आवें, चरणों में शीश झुकावें।
सब रोग शोक मिट जावें, आशीष आपका पावें।।55।।

ॐ ह्रीं विडौषधि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि तन जो छूवे वायु, नश रोग बढ़ावे आयु।
सर्वौषधि ऋद्धीधारी, हर लेते व्याधी सारी।।
हम पूजा करने आवें, चरणों में शीश झुकावें।
सब रोग शोक मिट जावें, आशीष आपका पावें।।56।।

ॐ ह्रीं सर्वौषधि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्नादि में विष होवे, कहते मुनि के सब खोवे।
मुखनिर्विष ऋद्धीधारी, हर लेते व्याधी सारी।।
हम पूजा करने आवें, चरणों में शीश झुकावें।
सब रोग शोक मिट जावें, आशीष आपका पावें।।57।।

ॐ ह्रीं मुखनिर्विषौषधि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दृष्टि में औषधि आवे, देखत ही जहर बिलावे।
दृश निर्विष औषधिधारी, हर लेते व्याधी सारी।।
हम पूजा करने आवें, चरणों में शीश झुकावें।
सब रोग शोक मिट जावें, आशीष आपका पावें।।58।।

ॐ ह्रीं दृष्टि निर्विषौषधि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(तांटक छंद)

उत्तम तप करने से मुनिवर, ऐसी ऋद्धि पाते हैं।
मानव से कह दें मरने को, शीघ्र वहीं मर जाते हैं।।
करुणा के धारी मुनिवर शुभ, कभी न ऐसा करते हैं।
देते हैं वरदान सभी को, औरों के दुख हरते हैं।।59।।

ॐ ह्रीं आशीर्विष रस ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कोई गल्ती हो जाने पर, क्रोध यदि मुनि को आवे।
दृष्टी पड़ जावे यदि उस पर, शीघ्र मृत्यु को वह पावे।।

करुणा के धारी मुनिवर शुभ, कभी न ऐसा करते हैं।
देते हैं वरदान सभी को, औरों के दुख हरते हैं।।60।।

ॐ ह्रीं दृष्टिविष रस ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रुक्ष आहार मुनि के कर में, हो जाता है क्षीर समान।
त्याग करें वह नित्य प्रति कुछ, मुनिवर हैं सद्गुण की खान।।
करुणा के धारी मुनिवर शुभ, कभी न ऐसा करते हैं।
देते हैं वरदान सभी को, औरों के दुख हरते हैं।।61।।

ॐ ह्रीं क्षीरस्रावी रस ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देवे रुक्ष आहार यदि कोई, हाथों में हो मधु समान।
त्याग त्याग कर भोजन करते, मुनिवर है सद्गुण की खान।।
करुणा के धारी मुनिवर शुभ, कभी न ऐसा करते हैं।
देते हैं वरदान सभी को, औरों के दुख हरते हैं।।62।।

ॐ ह्रीं मधुस्रावि रस ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विष मिश्रित भोजन हाथों में, अमृतमय हो जाता है।
अमृतस्रावी ऋद्धिधर की, महिमा को बतलाता है।।
करुणा के धारी मुनिवर शुभ, कभी न ऐसा करते हैं।
देते हैं वरदान सभी को, औरों के दुख हरते हैं।।63।।

ॐ ह्रीं अमृतस्रावि रस ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रूक्ष आहार मुनि के कर में, घृत समान हो मधुर महान।
सर्पिस्रावि ऋद्धिधर की, होती है इससे पहिचान।।
करुणा के धारी मुनिवर शुभ, कभी न ऐसा करते हैं।
देते हैं वरदान सभी को, औरों के दुख हरते हैं।।64।।

ॐ ह्रीं श्री सर्पिस्त्रावि रस ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट प्रातिहार्य

सुखद सुन्दर सुर तरु है, अशोक जिसका नाम है।
सौख्यकारी जगत जन का, शोक हरना काम है।।
प्रातिहार्य जिनेन्द्र पाए, चरण में उनके नमन।
यह अर्घ अर्पित मैं करूँ प्रभु, कर्म हों मेरे शमन।।65।।

ॐ ह्रीं तरु अशोक सत् प्रातिहार्य सहित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

सुर पुष्पवृष्टि कर रहे हैं, नृत्य करते भाव से।
हम पूजते हैं जिन प्रभु को, सभी मिलकर चाव से।।
प्रातिहार्य जिनेन्द्र पाए, चरण में उनके नमन।
यह अर्घ अर्पित मैं करूँ प्रभु, कर्म हों मेरे शमन।।66।।

ॐ ह्रीं सुर पुष्पवृष्टि सत् प्रातिहार्य सहित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दिव्य ध्वनि खिरती प्रभु की, जगत में सुखकार है।
जो भव्य जीवों के लिए, शुभ धर्म की आधार है।।
प्रातिहार्य जिनेन्द्र पाए, चरण में उनके नमन।
यह अर्घ अर्पित मैं करूँ प्रभु, कर्म हों मेरे शमन।।67।।

ॐ ह्रीं दिव्यध्वनि सत् प्रातिहार्य सहित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

चतु:षष्टि देवगण शुभ, चंवर ढौरें भाव से।
भक्ति करते नृत्य करके, सिर झुकाते चाव से।।
प्रातिहार्य जिनेन्द्र पाए, चरण में उनके नमन।
यह अर्घ अर्पित मैं करूँ प्रभु, कर्म हों मेरे शमन।।68।।

ॐ ह्रीं चतुषष्ठि चँवर सत् प्रातिहार्य सहित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिंहासन है रत्न मण्डित, समवशरण के बीच में।
करें भक्ती भाव से जो, फँसें नहिं जग कीच में।।
प्रातिहार्य जिनेन्द्र पाए, चरण में उनके नमन।
यह अर्घ अर्पित मैं करूँ प्रभु, कर्म हों मेरे शमन।।69।।

ॐ ह्रीं सिंहासन सत् प्रातिहार्य सहित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अति प्रभा मण्डित भामण्डल, सूर्य को लज्जित करे।
जो सप्त भव दर्शाय भवि के, हर्ष से मन को भरे।।

प्रातिहार्य जिनेन्द्र पाए, चरण में उनके नमन।
यह अर्घ अर्पित मैं करूँ प्रभु, कर्म हों मेरे शमन।।70।।

ॐ ह्रीं भामण्डल सत् प्रातिहार्य सहित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर दुंदुभि बजती सुहावन, प्रभु के गुण गा रही।
देखकर जनता नगर की, गा रही हर्षा रही।।
प्रातिहार्य जिनेन्द्र पाए, चरण में उनके नमन।
यह अर्घ अर्पित मैं करूँ प्रभु, कर्म हों मेरे शमन।।71।।

ॐ ह्रीं देवदुंदुभि सत् प्रातिहार्य सहित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शीश पर प्रभु के मनोहर, छत्र त्रय शुभ झूमते।
कर रहे हैं भक्ति आकर, देव पद को चूमते।।
प्रातिहार्य जिनेन्द्र पाए, चरण में उनके नमन।
यह अर्घ अर्पित मैं करूँ प्रभु, कर्म हों मेरे शमन।।72।।

ॐ ह्रीं छत्रत्रय सत् प्रातिहार्य सहित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

सोरठाह्न **चौंसठ ऋद्धि पाय, प्रातिहार्य वसु पाए हैं।**
विशद मोक्ष को जाय, पूजा कर जिन देव की।।73।।

ॐ ह्रीं चौसठ ऋद्धि अष्ट प्रातिहार्य सहिताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जाप:- ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नम:।

समुच्चय जयमाला

दोहा- **नेमिनाथ के चरण में, झुका रहे हम माथ।**
गाते हैं जयमालिका, भक्तिभाव के साथ।।

(चौपाई छन्द)

नेमीनाथ दया के सागर, करुणाकर हे ज्ञान ! उजागर।
प्रभु हैं जन-जन के हितकारी, ज्ञानी ध्यानी जग उपकारी।।
तीन काल तिय जग के ज्ञाता, जन-जन का प्रभु तुमसे नाता।
तुमने मोक्ष मार्ग दर्शाया, नर जीवन का सार बताया।।
सुर नर जिनको वन्दन करते, ऐसे प्रभु जग के दुख हरते।
कार्तिक शुक्ला षष्ठी प्यारी, प्रभु जी आप हुए अवतारी।।
राजा समुद्र विजय के घर में, रानी शिवादेवी के उर में।
अपराजित से च्युत हो आये, शौरीपुर नगरी को पाए।।

श्रावण शुक्ला षष्ठी आई, शौरीपुर में जन्मे भाई।
अनहद बाजे देव बजाए, सुर-नर पशु मन में हर्षाए।।
इन्द्र तभी ऐरावत लाया, शची ने प्रभु को गोद बिठाया।
माया मय शिशु वहाँ लिटाया, माता ने कुछ जान न पाया।।
क्षीर सिंधु से जल भर लाये, वसु योजन के कलश भराये।
पाण्डुक वन अभिषेक कराये, इन्द्रों ने तव चँवर ढुराये।।
शंख चिन्ह दाएँ पग पाया, नेमिनाथ सुर नाम सुनाया।
आयु सहस्र वर्ष की पाई, चालीस हाथ रही ऊँचाई।।
श्याम वर्ण प्रभु तन का पाया, जग को अतिशय खूब दिखाया।
नारायण बलदेव से भाई, आन मिले जो हैं अधिकाई।।
कौतूहल वश बात ये आई, शक्ति किसमें अधिक है भाई।
कोई वीर बलदेव को कहते, कोई कृष्ण की हामी भरते।।
कोई शम्भू नाम पुकारे, कोइ अनिरुद्ध के देते नारे।
नेमीनाथ का नाम भी आया, कुछ लोगों को नहीं ये भाया।।
उँगली कनिष्ठ मोड़ दिखलाई, सीधी करे जो वीर है भाई।
सब अपनी शक्ती अजमाए, कोई सीधी न कर पाए।।
हार मान योद्धा सिरनाये, श्री कृष्ण मन में घबड़ाए।
राज्य छीन न लेवे भाई, कृष्ण ने युक्ति एक लगाई।।
जल क्रीड़ा की राह दिखाई, पटरानी कई साथ लगाई।
नेमी जामवती से बोले, भाभी मेरी धोती धो ले।।
भाभी ने तब रौब जमाया, मैंने पटरानी पद पाया।
तुम भी अपना ब्याह रचाओ, रानी पा धोती धुलवाओ।।
मेरे पति चक्र के धारी, शंख बजाते विस्मयकारी।
तुमको जरा लाज नहिं आई, हमसे छोटी बात सुनाई।।
रोम-रोम प्रभु का थर्राया, उनको सहन नहीं हो पाया।
आयुधशाला पहुँचे भाई, शैय्या नाग की प्रभु बनाई।।
पैर की उँगली को फैलाया, उस पर रख कर चक्र चलाया।
पीछे हाथ में शंख उठाया, नाक के स्वर से उसे बजाया।।

उससे तीन लोक थर्राया, श्री कृष्ण का मन घबड़ाया।
जाकर भाई को समझाया, उनके मन को धैर्य दिलाया।।
शादी की तब बात चलाई, जूनागढ़ पहुँचे फिर भाई।
उग्रसेन से कृष्ण सुनाए, राजुल नेमि से परणाएँ।।
उग्रसेन हर्षित हुए भारी, शीघ्र ब्याह की की तैयारी।
कृष्ण ने तब की मायाचारी, नृप बुलवाए मांसाहारी।।
नेमि दूल्हा बनकर आए, बाड़े में कई पशु रंभाए।
करुणा से नेमि भर आए, पूछा क्यों यह पशु बंधाए।।
इन पशुओं का मांस बनेगा, इन लोगों में हर्ष मनेगा।
सुनते ही वैराग्य समाया, पशुओं का बन्धन खुलवाया।।
कंगन तोड़े वस्त्र उतारे, गिरनारी जा दीक्षा धारे।
राजुल सुनकर के घबड़ाई, दौड़ प्रभु के चरणों आई।।
प्रभु को राजुल ने समझाया, नहिं माने तो साथ निभाया।
केशलुंच कर दीक्षा धारी, बनी आर्यिका राजुल नारी।
श्रावण शुक्ला षष्ठी पाए, पद्मासन से ध्यान लगाए।।
सहस एक नृप दीक्षा धारे, द्वारावति में लिए आहारे।
श्रावण सुदि नौमी दिन पाया ! वरदत्त ने यह पुण्य कमाया।।
अश्विन सुदि एकम् दिन आया, प्रभु ने केवलज्ञान जगाया।
समवशरण मिल देव बनाए, दिव्य देशना प्रभु सुनाए।।
ग्यारह गणधर प्रभु ने पाए, वरदत्त उनमें प्रथम कहाए।
आषाढ़ शुक्ल आठें दिन भाई, ऊर्जयंत से मुक्ति पाई।।
सौख्य अनन्त प्रभु ने पाया, नर जीवन का सार बताया।
हम भी उस पदवी को पाएँ, कर्म नाश कर मुक्ति पाएँ।।

ॐ ह्रीं सर्व मंगलदायक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा

शांति मिले विशेष, रोग शोक चिंता मिटे।
पाप शाप हो नाश, विशद मोक्ष पदवी मिले।।

(पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्)

श्री नेमिनाथ की आरती

तर्ज– भक्ति बे करार है....

नेमिनाथ दरबार है, प्रभु की जय जयकार है।
आरति करने आये स्वामी, आज तुम्हारे द्वार हैं।।

शौरीपुर में जन्म लिए प्रभु, घर–घर मंगल छाया जी।
इन्द्र सुरेन्द्र महेन्द्र सभी ने, प्रभु का न्हवन कराया जी।।
नेमिनाथ दरबार है, प्रभु की जय जयकार है।
आरति करने आये स्वामी, आज तुम्हारे द्वार हैं।।1।।

नेमिकुंवर जी ब्याह रचाने, जूनागढ़ को आये जी।
पशुओं का आक्रन्दन लखकर, उनको तुरत छुड़ाए जी।।
नेमिनाथ दरबार है, प्रभु की जय जयकार है।
आरति करने आये स्वामी, आज तुम्हारे द्वार हैं।।2।।

मन में तब वैराग्य समाया, देख दशा संसार की।
राह पकड़ ली तभी प्रभु ने, महाशैल गिरनार की।।
नेमिनाथ दरबार है, प्रभु की जय जयकार है।
आरति करने आये स्वामी, आज तुम्हारे द्वार हैं।।3।।

पञ्च मुष्टि से केशलुंच कर, भेष दिगम्बर धारे जी।
कठिन तपस्या के आगे सब, कर्म शत्रु भी हारे जी।।
नेमिनाथ दरबार है, प्रभु की जय जयकार है।
आरति करने आये स्वामी, आज तुम्हारे द्वार हैं।।4।।

केवलज्ञान जगाकर प्रभु ने, जग को राह दिखाई जी।
भवसागर को पार करूँ, यह 'विशद' भावना भाई जी।।
नेमिनाथ दरबार है, प्रभु की जय जयकार है।
आरति करने आये स्वामी, आज तुम्हारे द्वार हैं।।5।।

●●●

श्री नेमीनाथ चालीसा

दोहा- परमेष्ठी के पद युगल, करते विशद प्रणाम।
नेमिनाथ का भाव से, ले सुखकारी नाम।।

(चौपाई छन्द)

नेमीनाथ दया के सागर, करुणाकर हे ज्ञान ! उजागर।
प्रभु हैं जन-जन के हितकारी, ज्ञानी ध्यानी जग उपकारी।।
तीन काल तिय जग के ज्ञाता, जन-जन का प्रभु तुमसे नाता।
तुमने मोक्ष मार्ग दर्शाया, नर जीवन का सार बताया।
सुर नर जिनको वन्दन करते, ऐसे प्रभु जग के दुःख हरते।।
कार्तिक शुक्ला षष्ठी प्यारी, प्रभु जी आप हुए अवतारी।
राजा समुद्र विजय के घर में, रानी शिवादेवी के उर में।।
अपराजित से च्युत हो आये, शौरीपुर नगरी को पाए।
श्रावण शुक्ला षष्ठी आई, शैरीपुर में जन्में भाई।।
अनहद बाजे देव बजाए, सुर-नर पशु मन में हर्षाए।
इन्द्र तभी ऐरावत लाया, सची ने प्रभु को गोद बिठाया।।
माया मय शिशु वहाँ लिटाया, माता ने कुछ जान न पाया।
क्षीर सिंधु से जल भर लाये, वसु योजन के कलश भराये।
पाण्डुक वन अभिषेक कराये, इन्द्रों ने तव चँवर ढुराये।
शंख चिन्ह दाएँ पग पाया, नेमिनाथ सुर नाम सुनाया।।
आयु सहस्त्र वर्ष की पाई, चालीस हाथ रही ऊँचाई।
श्याम वर्ण प्रभु तन का पाया, जग को अतिशय खूब दिखाया।।
नारायण बलदेव से भाई, आन मिले जो हैं अधिकाई।
कौतूहल वश बात ये आई, शक्ति किसमें अधिक है भाई।।
कोई वीर बलदेव को कहते, कोई कृष्ण की हामी भरते।
कोई शम्भू नाम पुकारें, कोइ अनिरुद्ध के देते नारे।।

नेमीनाथ का नाम भी आया, कुछ लोगों को नहीं ये भाया।
ऊँगली कनिष्ठ मोड़ दिखलाई, सीधी करे जो वीर है भाई।।
सब अपनी शक्ति अजमाए, कोई सीधी न कर पाए।
हार मान योद्धा सिरनाये, श्री कृष्ण मन में घबड़ाए।।
राज्य छीन न लेवे भाई, कृष्ण ने युक्ति एक लगाई।
जल क्रीड़ा की राह दिखाई, पटरानी कई साथ लगाई।।
नेमी जामवती से बोले, भाभी मेरी धोती धो ले।
भाभी ने तब रौब जमाया, मैंने पटरानी पद पाया।।
तुम भी अपना ब्याह रचाओ, रानी पा धोती धुलवाओ।
मेरे पति चक्र के धारी, शंख बजाते विस्मयकारी।।
तुमको जरा लाज नहिं आई, हमसे छोटी बात सुनाई।
रोम-रोम प्रभु का थर्राया, उनको सहन नहीं हो पाया।।
आयुधशाला पहुँचे भाई, शैया नाग की प्रभु बनाई।
पैर की ऊँगली को फैलाया, उस पर रख कर चक्र चलाया।
पीछे हाथ में शंख उठाया, नाक के स्वर से उसे बजाया।।
उससे तीन लोक थर्राया, श्री कृष्ण का मन घबड़ाया।
जाकर भाई को समझाया, उनके मन को धैर्य दिलाया।।
शादी की तब बात चलाई, जूनागढ़ पहुंचे फिर भाई।
उग्रसेन से कृष्ण सुनाए, राजुल नेमि से परणाएँ।।
उग्रसेन हर्षित हुए भारी, शीघ्र ब्याह की की तैयारी।
कृष्ण ने तब की मायाचारी, नृप बुलवाए मांसाहारी।।
नेमि दूल्हा बनकर आए, बाड़े में कई पशु रंभाए।
करुणा से नेमि भर आए, पूछा क्यों यह पशु बंधाए।।
इन पशुओं का मांस बनेगा, इन लोगों में हर्ष मनेगा।
सुनते ही वैराग्य समाया, पशुओं का बन्धन खुलबाया।।

कंगन तोड़े वस्त्र उतारे, गिरनारी जा दीक्षा धारे।
राजुल सुनकर के घबड़ाई, दौड़ प्रभु के चरणों आई।।
प्रभु को राजुल ने समझाया, नहिं माने तो साथ निभाया।
केशलुंच कर दीक्षा धारी, बनी आर्यिका राजुल नारी।
श्रावण शुक्ला षष्ठी पाए, पद्मासन से ध्यान लगाए।।
सहस एक नृप दीक्षा धारे, द्वारावति में लिए आहारे।
श्रावण सुदि नौमी दिन पाया ! वरदत्त ने यह पुण्य कमाया।।
अश्विन सुदि एकम् दिन आया, प्रभु ने केवलज्ञान जगाया।
सवशरण मिल देव बनाए, दिव्य देशना प्रभु सुनाए।।
ग्यारह गणधर प्रभु ने पाए, वरदत्त उनमें प्रथम कहाए।
आषाढ़ शुक्ल आठें दिन भाई, ऊर्जयंत से मुक्ति पाई।।
सौख्य अनन्त प्रभु ने पाया, नर जीवन का सार बताया।
हम भी उस पदवी को पाएँ, कर्म नाश कर मुक्ति पाएँ।।

सोरठा– चालीसा चालीस दिन में, जो पढ़ता 'विशद'।
चरण झुकाए शीश, विनय भाव के साथ जो।।

सोरठा– शांति मिले विशेष, रोग शोक चिंता मिटे।
पाप शाप हो नाश, विशद मोक्ष पदवी मिले।।

* * *

प्रशस्ति

दोहा– भरत क्षेत्र के मध्य है, भारत देश महान।
वृषभादि चौबीस शुभ, जहाँ हुए भगवान।।
भारत में कई प्रान्त हैं, एक रहा गुजरात।
गरिमा से करता कई, देशों को भी मात।।
ऊर्जयन्त गिरनार गिरि, जग में रहा महान।
नेमिनाथ भगवान ने, पाया पद निर्वाण।।
वन्दन करके तीर्थ पर, मिलता है सुख चैन।
दर्शन करने को सभी, जाते जैन अजैन।।
काल दोष से या कहें, हुई है कोई भूल।
लोग धर्म से च्युत हुए, चले नहीं अनुकूल।।
वैष्णव मत के सन्त भी, पहुँचे दर्शन हेत।
जनता भी पहुँची वहाँ, निज परिवार समेत।।
संतों में लालच बढ़ा, काफी पाया दान।
बना लिया फिर वहीं पर, अपना निज स्थान।।
दत्तत्रय के नाम का, माने तीरथ धाम।
कब्जा जबरन कर लिया, चला न कोई पैगाम।।
साधु कई रहते वहाँ, लेकर के त्रिशूल।
नेमिनाथ के नाम से, हो जाते प्रतिकूल।।
उन प्रभु के गुणगान को, लिक्खा एक विधान।
पच्चिस सौ चौंतिस रहा, महावीर निर्वाण।।
जिला एक अजमेर है, प्रान्त है राजस्थान।
पावन वर्षा योग में, श्रावण मास महान।।
सोलह दिन के पक्ष में, सोलह हुए विधान।
भक्ति भाव से मिल किए, जिनवर का गुणगान।
नेमिनाथ विधान से, पूजा करके लोग।
बल बुद्धि वैभव सभी, का पावें संयोग।।
भूल चूक को भूलकर, पढ़े भाव के साथ।
कर्म नाश कर वह बने, शिवनगरी के नाथ।।

सोरठा– विशद भाव के साथ, नेमिनाथ पूजा करें।
पावें मुक्ति बास, अजर अमर पद को लहें।।

प.पू. 108 आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज की पूजन

पुण्य उदय से हे ! गुरुवर, दर्शन तेरे मिल पाते हैं।
श्री गुरुवर के दर्शन करके, हृदय कमल खिल जाते हैंॐ
गुरु आराध्य हम आराधक, करते उर से अभिवादन।
मम हृदय कमल में आ तिष्ठो, गुरु करते हैं हम आह्वाननॐ

ॐ ह्रूँ 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननं
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सांसारिक भोगों में फँसकर, ये जीवन वृथा गंवाया है।
रागद्वेष की वैतरणी से, अब तक पार न पाया हैॐ
विशद सिंधु के श्री चरणों में, निर्मल जल हम लाए हैं।
भव तापों का नाश करो, भव बंध काटने आये हैंॐ

ॐ ह्रूँ 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध रूप अग्नि से अब तक, कष्ट बहुत ही पाये हैं।
कष्टों से छुटकारा पाने, गुरु चरणों में आये हैंॐ
विशद सिंधु के श्री चरणों में, चंदन घिसकर लाये हैं।
संसार ताप का नाश करो, भव बंध नशाने आये हैंॐ

ॐ ह्रूँ 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय संसार ताप विध्वंशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चारों गतियों में अनादि से, बार-बार भटकाये हैं।
अक्षय निधि को भूल रहे थे, उसको पाने आये हैंॐ
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अक्षय अक्षत लाये हैं।
अक्षय पद हो प्राप्त हमें, हम गुरु चरणों में आये हैंॐ

ॐ ह्रूँ 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

काम बाण की महावेदना, सबको बहुत सताती है।
तृष्णा जितनी शांत करें वह, उतनी बढ़ती जाती हैॐ
विशद सिंधु के श्री चरणों में, पुष्प सुगंधित लाये हैं।
काम बाण विध्वंश होय गुरु, पुष्प चढ़ाने आये हैंॐ

ॐ ह्रूँ 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

काल अनादि से हे गुरुवर ! क्षुधा से बहुत सताये हैं।
खाये बहु मिष्ठान जरा भी, तृप्त नहीं हो पाये हैंॐ

विशद सिंधु के श्री चरणों में, नैवेद्य सुसुन्दर लाये हैं।
क्षुधा शांत कर दो गुरु भव की ! क्षुधा मेटने आये हैंॐ

ॐ ह्रूँ 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह तिमिर में फंसकर हमने, निज स्वरूप न पहिचाना।
विषय कषायों में रत रहकर, अंत रहा बस पछतानाॐ
विशद सिंधु के श्री चरणों में, दीप जलाकर लाये हैं।
मोह अंध का नाश करो, मम दीप जलाने आये हैंॐ

ॐ ह्रूँ 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अशुभ कर्म ने घेरा हमको, अब तक ऐसा माना था।
पाप कर्म तज पुण्य कर्म को, चाह रहा अपनाना थाॐ
विशद सिंधु के श्री चरणों में, धूप जलाने आये हैं।
आठों कर्म नशाने हेतु, गुरु चरणों में आये हैंॐ

ॐ ह्रूँ 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पिस्ता अरु बादाम सुपाड़ी, इत्यादि फल लाये हैं।
पूजन का फल प्राप्त हमें हो, तुमसा बनने आये हैंॐ
विशद सिंधु के श्री चरणों में, भाँति-भाँति फल लाये हैं।
मुक्ति वधु की इच्छा करके, गुरु चरणों में आये हैंॐ

ॐ ह्रूँ 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर ! थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर लें, मन में भाव बनाये हैंॐ
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु, चरणों में सिर धरते हैंॐ

ॐ ह्रूँ 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- **विशद सिंधु गुरुवर मेरे, वंदन करूँ त्रिकाल।**
मन-वन-तन से गुरु की, करते हैं जयमालॐ

गुरुवर के गुण गाने को, अर्पित है जीवन के क्षण-क्षण।
श्रद्धा सुमन समर्पित हैं, हर्षायें धरती के कण-कणॐ

छतरपुर के कुपी नगर में, गूँज उठी शहनाई थी।
श्री नाथूराम के घर में अनुपम, बजने लगी बधाई थी॥
बचपन में चंचल बालक के, शुभादर्श यूँ उमड़ पड़े।
ब्रह्मचर्य व्रत पाने हेतु, अपने घर से निकल पड़े॥
आठ फरवरी सन् छियानवे को, गुरुवर से संयम पाया।
मोक्ष ज्ञान अन्तर में जागा, मन मयूर अति हर्षाया॥
in vkpk;Z izfr"Bk dk 'kqHk] nks gtkj lu~ ik;p jgkA
rsjg Qjojh clar iapeh] cus xq# vkpk;Z vgkAA
तुम हो कुंद-कुंद से कुन्दन, सारा जग कुन्दन करते।
निकल पड़े बस इसलिए, भवि जीवों की जड़ता हरते॥
मंद मधुर मुस्कान तुम्हारे, चेहरे पर बिखरी रहती।
तव वाणी अनुपम न्यारी है, करुणा की शुभ धारा बहती॥
तुममें कोई मोहक मंत्र भरा, या कोई जादू टोना है।
है वेश दिगम्बर मनमोहक अरु, अतिशय रूप सलौना है॥
हैं शब्द नहीं गुण गाने को, गाना भी मेरा अन्जाना।
हम पूजन स्तुति क्या जाने, बस गुरु भक्ति में रम जाना॥
गुरु तुम्हें छोड़ न जाएँ कहीं, मन में ये फिर-फिरकर आता।
हम रहें चरण की शरण यहीं, मिल जाये इस जग की साता॥
सुख साता को पाकर समता से, सारी ममता का त्याग करें।
श्री देव-शास्त्र-गुरु के चरणों में, मन-वच-तन अनुराग करें॥
गुरु गुण गाएँ गुण को पाने, औ सर्वदोष का नाश करें।
हम विशद ज्ञान को प्राप्त करें, औ सिद्ध शिला पर वास करें॥

ॐ ह्रूँ 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु की महिमा अगम है, कौन करे गुणगान।
मंद बुद्धि के बाल हम, कैसे करें बखान॥

इत्याशीर्वादः (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

ब्र. आस्था दीदी

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्जः- माई री माई मुंडेर पर तेरे बोल रहा कागा.....)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारे, आरति मंगल गावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता॥
सत्य अहिंसा महाव्रती की.....2, महिमा कहीं न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया॥
जग की माया को लखकर के.....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा॥
गुरु की भक्ति करने वाला.....2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे॥
आशीर्वाद हमें दो स्वामी.....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के... जय...जय॥

रचयिता : श्रीमती इन्दुमती गुप्ता, श्योपुर